RNI-MAHBIL/2010/33592

जैन तीर्थवंदना

वर्ष : 10	अंक : 11	मुम्बई, फरवरी 2021	पृष्ठ : 36	मूल्य : 25	हिन्दी
VOLUME : 10	ISSUE : 11	MUMBAI, FEBRUARY 2021	PAGES : 36	PRICE : 25	English Monthly

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी का मुखपत्र

वीर निर्वाण संवत् 2547

जैन मठ, मेलसित्तामूर (जिनकांची) स्थित भगवान नेमिनाथ की प्राचीन अद्भुत प्रतिमा

परमपूज्य श्वेतपिच्छाचार्य श्रीविद्यानन्दजी मुनिराज की समाज को अद्भुत भेंट

दिगम्बर जैन मन्दिरजी का प्रारुप

बिहार सरकार के भूतपूर्व महामहिम राज्यपाल **रामनाथ कोविंद जी** एवं भूतपूर्व महामहिम **सत्यपाल मलिक जी** भगवान महावीर जन्मभूमि पर दर्शनार्थ पधारे और उन्होंने घोषणा की निश्चित रुप से वैशाली (बिहार) भगवान महावीर की जन्मभूमि है। इसी शुभ अवसर पर उन्होंने अनुदान में 2 एकड़ भूमि वाहनों की पार्किंग हेतु संस्थान को प्रदान करी।

मंगल आशीर्वाद

प.पू. आचार्य श्रीविद्यानन्दजी मुनिराज

वयोवृद्ध, तपोवृद्ध, ज्ञानवृद्ध, युगप्रणेता, सिद्धान्तचक्रवर्ती परमपूज्य **श्वेतपिच्छाचार्य श्रीविद्यानन्दजी मुनिराज** द्वारा अपने कार्यकाल में किये गए महत्त्वपूर्ण कार्य एवं उपलब्धियों के स्मरण हेतु जैन समाज द्वारा **कीर्तिस्तम्भ** का निर्माण भगवान महावीर जन्मभूमि, वैशाली (बिहार) में किया जा रहा है।आप सभी धर्मानुरागी महानुभावों से विनम्र अनुरोध है कम से कम 1,11,000/- रुपयों की सहयोग राशि इस पुण्य कार्य के लिए प्रदान कर संस्थान की **संरक्षक सदस्यता** प्राप्त करें। (उन सभी महानुभावों का नाम क्रमानुसार शिलापट्ट पर उचित स्थान पर टंकोत्कीर्ण किया जाएगा) ताकि आप भी वह स्तर पा सकें जो कि ऐसा लगे मानों आप भी वहाँ की प्रजातंत्र प्रणाली के एक ऐसे सांसद सदस्य हैं जो अपने को 'अहं राजा' मानते हुए वहाँ के विकास के कार्यों में समर्पित भाव से जुड़े हैं।

इस ऐतिहासिक मंगल कार्य के लिए आप संस्थान के क्षेत्रिय अध्यक्ष/मन्त्री से सम्पर्क कर शक्तिनुसार उनके माध्यम से भी राशि उपलब्ध करा सकते हैं।

कीर्तिस्तम्भ एवं मानस्तम्भ का प्रारुप

1. मानस्तम्भ और कीर्तिस्तम्भ का मिला-जुला रुप बनेगा। 2. मानस्तम्भ की ऊँचाई 71 फुट होगी। 3. इसमें ऊपर जाने के लिए अन्दर से सीढ़ियाँ बनेंगी। 4. इसमें सहस्रकूट जिनालय बनाया जायेगा, जिसमें 24 तीर्थंकरों की प्रतिमाएँ विराजमान होंगी।

भावी योजनाएँ— 1. ध्यान केन्द्र 2. साधु-साध्वी निवास 3. सभागार 4. संगहालय 5. पुस्तकालय 6. स्कूल 7. अस्पताल 8. नन्द्यावर्त महल 9. कीर्तिस्तम्भ 10. वैशाली जनपद का सौन्दर्यीकरण करना।

हमारी भावी योजनाओं में अपना बहुमूल्य सहयोग अवश्य प्रदान करें एवं किसी भी प्रकार की जानकारी हेतु निम्नलिखित महानुभावों से सम्पर्क करें-

साहू अखिलेश जैन	राजकुमार जैन	सतीश चन्द जैन SCJ	नरेश जैन (कामधेनु), दिल्ली	अनिल जैन	मुकेश जैन	राकेश जैन	राजेन्द्र जैन
मुख्य संरक्षक	अध्यक्ष	अध्यक्ष-अर्थव्यवस्था	अध्यक्ष—अकाऊंट उपसमिति	कार्याध्यक्ष	कोषाध्यक्ष	निर्माण समिति	मन्दिर व्यवस्थापक

आपके द्वारा भेजी जाने वाली धनराशि भगवान महावीर स्मारक समिति, स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, IFSC Code : SBIN 0001624 जे.एन.यू शाखा, नई दिल्ली में खाता संख्या 10596551078 एवं HDFC बैंक खाता संख्या 50100264497212 IFSC Code : HDFC 0000586 ग्रीनपार्क नई दिल्ली शाखा में जमा कराई जा सकती है।

भगवान महावीर स्मारक समिति

वैशाली कार्यालय : वासोकुण्ड (विदेह कुण्डपुर), जिला—मुजफ्फरपुर-844128 (बिहार), मोबाईल : 07544003396

दिल्ली कार्यालय : कुन्दकुन्द भारती, 18-बी, स्पेशल इंस्टीट्यूशनल एरिया, नई दिल्ली-110067

फोन : (011) 2656 4510 मोबाईल : 09871138842 ई-मेल : lordmahavirbirthplace@gmail.com

वेबसाईट : lordmahaveerbirthplace.com सम्पर्क सूत्र : 9350505050, 9871138842

नरेश जैन (चेयरमैन-आशियाना इस्पात लिमिटेड) **पुनीत जैन** (प्रबंध निदेशक-आशियाना इस्पात लिमिटेड)

ASHIANA ISPAT LIMITED

(ISO 9001-2008 Certified Co.)

Mfr.: ASHIANA®, KAMDHENU, AL KAMDHENU™ GOLD TMT

Regd. Office: A-1116, RIICO Industrial Area, Phase-III, Bhiwadi,
Distt. - Alwar (Rajasthan), E-mail: ashianagroup@yahoo.co.in
Corp. Office: C-9/36, Sector-8, Rohini, Delhi-110085

दमदार सरिया TMT Grade Fe 415,500,550

हम साधर्मी वात्सल्य में पीछे क्यों हैं ?

एक बात पर मैं कई वर्षों से चिंतन कर रहा हूँ कि एक समय भारत का मूल धर्म जैनधर्म था वह आज अति-अल्पसंख्यक की श्रेणी में कैसे आ गया, इसके पीछे अनेक कारण रहे होंगे जो कभी बहुसंख्यक थे आज अपने अस्तित्व के संकट के मुहाने पर खड़े हैं। आक्रमणकारियों के आक्रमण से तो हमारी प्राचीन धरोहर का बड़े पैमाने पर विनाश हुआ, लोगों ने जैन धर्म छोड़ा। यह क्रम लगातार चलता रहा और १९९० के दशक से परिवार नियोजन को जैनों ने बड़ी गंभीरता से लिया और इस मामले में जैन धर्मावलंबी सरकार के हर संदेश का अक्षरशः पालन करते आ रहे हैं।

जैनों ने सबसे पहले **हम दो हमारे दो** मंत्र को अपनाया और अब युवापीढ़ी **हम दो हमारा एक** तक पहुँच चुकी है। कुछ अति आधुनिक जैन परिवारों में तो **हम दो हमारा एक भी नहीं** का चलन बढ़ रहा है। इन सभी कारणों से २०११ की जनगणना में जैनों की वृद्धि दर नकारात्मक रही और अब २०२१ की जनगणना आरंभ होने जा रही है। इस जनगणना में भी स्थिति सुधरने की कोई आशा नहीं है पर सत्य का ज्ञान तो जनगणना २०२१ के परिणाम सामने आने पर ही मिलेगा।

२०११ की जनगणना के आँकड़ों के विश्लेषण से यह निष्कर्ष सामने आए हैं कि यदि जैनों ने अपने परिवार नियोजन की नीति को नहीं बदला तो २०४१ की जनगणना आते-आते जैन संख्याबल में अपने अस्तित्व के संकट से जूझ रहे होंगे और जनसंख्या विशेषज्ञों का तो यहाँ तक मानना है यदि स्थिति में सुधार नहीं हुआ तो २०४० तक जैनों की जनसंख्या पारसियों जितनी ही बचेगी क्योंकि अनेक कारणों से विभिन्न क्षेत्रों-राज्यों के मूल निवासी जैन धर्म छोड़ते जा रहे हैं, धर्मांतरण में आर्थिक कारणों के साथ-२ सामाजिक कारण भी जिम्मेदार हैं। सामाजिक कारणों में एक गंभीर कारण पर आज मैं चर्चा करना चाहता हूँ, जिस पर समाज में कोई चर्चा नहीं करता है।

वह कारण है छुआछूत अर्थात् अस्पृश्यता। आप लोग शायद इस बात पर भरोसा न करें पर सच्चाई यही है कि हमारे समाज में यह कुरीति किसी न किसी रूप में विद्यमान है।

जैन धर्मावलंबी सदैव से ही घुमंतू प्रवृत्ति के रहे हैं, वे अपने व्यापार को बढ़ाने के लिए एक स्थान छोड़कर अन्य स्थानों पर बस जाते हैं, वहाँ अपना कारोबार बढ़ाकर अपना प्रभुत्व बढ़ाते हैं। इसमें कुछ भी गलत नहीं है पर ये प्रवासी बंधु अपने पैसे और प्रभुत्व के बल पर संबंधित क्षेत्र व राज्य के मूल निवासी दिगंबर जैनों के साथ जाने-अनजाने में छुआछूत का व्यवहार करते हैं, सामाजिक संस्थाओं में मूल निवासियों को प्रतिनिधित्व नहीं दिया जाता है, सामाजिक व धार्मिक समारोहों व आयोजनों में इन मूल निवासियों के साथ भेदभाव देखा जाता है। तमिल जैनों के साथ छुआछूत होता है, यह तो आप जानते ही होंगे।

तमिलनाडू में लगभग ८२००० तमिल जैन हैं पर राष्ट्रीय स्तर की किसी भी संस्था में आज तक उन्हें प्रतिनिधित्व नहीं मिला है, तमिल जैनों की संस्थाओं को तो धर्म संस्कृति संरक्षण के कार्य करने में बाधाएँ डाली जाती हैं, राष्ट्रीय संस्थाओं से उन्हें किसी भी प्रकार का अनुदान न मिले यह सुनिश्चित किया जाता है। तेलुगू जैनों के बारे में तो किसी को कुछ पता ही नहीं है, कि वे कहाँ रहते हैं, किस दशा में हैं। झारखंड, बिहार, बंगाल व ओडिशा के मूल जैन सराक जाति के लोग हैं पर वे भी इस सामाजिक छुआछूत का शिकार होते हैं, उन्हें किसी संस्था में प्रतिनिधित्व नहीं है। *मैं जब अध्यक्ष बना तब मुझे इस प्रकार के छुआछूत का ज्ञान नहीं था अन्यथा मैं अवश्य प्रयास करता कि संबंधित राज्यों के उपेक्षित मूल निवासी जैनों को तीर्थक्षेत्र कमेटी में प्रतिनिधित्व मिले।*

समाधिस्थ आचार्य ज्ञानसागर जी महाराज ने सराक क्षेत्र के उत्थान का सर्वप्रथम प्रयास किया और उससे सराकों की स्थिति में अनेक बदलाव आए, वे जैन धर्म की मुख्य धारा से जुड़े। सामाजिक कार्यक्रमों में सराक जैनों के साथ भेदभाव होता है, भोजन की व्यवस्था एकसाथ न करके अलग-२ की जाती है और यह किसी से छुपा हुआ नहीं है।

क्या दिगंबर जैन साधर्मी वात्सल्य का अर्थ भूल गए हैं या फिर यह वात्सल्य केवल फोटो खिंचवाने तक सीमित रह गया है। इसी प्रकार महाराष्ट्र के मूल निवासी जैनों को भी उपेक्षित किया जाता रहा है।

यह हमारे सामने गंभीर प्रश्न खड़े करता है कि हम जैन-धर्म को किस मुहाने पर ले जाकर छोड़ना चाहते हैं?

वर्ष २००७ में गुरुदेव दिगंबर जैनाचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज से 'वीर' पत्रिका के प्रधान संपादक रवीन्द्र मालव ने साक्षात्कार में प्रश्न किया कि "नए लोगों को जैन धर्म की परिधि में लाने और जैन धर्मावलंबियों का संख्या बल बढ़ाने की ओर किसी का कोई ध्यान नहीं है। क्या किया जाए?" इस पर आचार्य श्री जी ने जो उत्तर दिया, वह बहुत ही महत्त्वपूर्ण है और समाज के बुद्धिजीवी, विद्वानों, साधुओं और नेताओं को चिंतन के लिये विवश कर देता है। उन्होंने उत्तर दिया कि "इतिहास साक्षी है एक समय ऐसा था जब अनेक जैन मुनि प्रायः यह संकल्प ले लेते थे कि वे इतने सहस्र या इतने शतक नए व्यक्तियों को जैन धर्म में दीक्षित करने के बाद ही आहार लेंगे और वे अक्षरशः इसका पालन भी करते थे। अनेक कथानक उपलब्ध हैं। जैन धर्म बहुत विशाल है, किन्तु हम संकीर्ण हो गए हैं। हमारे धर्म की विशालता का कारण इसका विशाल दृष्टिकोण है। हमें संकीर्णता को तोड़ना होगा।"

एक अन्य प्रश्न "हम साधर्मी बन्धुओं का सहयोग किस प्रकार कर सकते हैं?" के उत्तर में आचार्य श्री जी ने कहा था कि, "सर्वप्रथम हम यह विचारें कि क्या हम इसके योग्य हैं। हमारे यहाँ 'आश्रय दान' की बहुत महत्ता है। दुर्भाग्य से 'आश्रय दान' की प्रथा लुप्त या कमजोर हो रही है। हमारा इस ओर बहुत कम ध्यान है। समाज के जरूरतमंद और कमजोर लोगों को 'आश्रय दान' देने की प्रथा को सशक्त करने की आवश्यकता है। लाखों-करोड़ों रुपया विषयों और कषायों में बहा देंगे, पर किसी को आश्रय नहीं देंगे। साधर्मी के संरक्षण या उत्थान में एक पैसा भी खर्च नहीं करेंगे। शास्त्रों में कहा गया है, एक वृक्ष लगाना सौ पुत्रों को जन्म देने के समान है। वृक्ष के पास सैकड़ों - हजारों पथिक आएँगे और ऑक्सीजन ग्रहण करेंगे। पेड़ से सैकड़ों लोगों को छाँह मिलती है, फल मिलते हैं। इसी प्रकार एक निराश्रित को आश्रय देने से, उसे जीवन में आगे बढ़ने में मदद करने से, सैकड़ों पुत्रों को जन्म देने से भी ज्यादा पुण्य का संचय या अर्जन होता है। किन्तु आज यह व्यवस्था दुर्लभ हो रही है। इस दिशा में चिंतन नहीं हो रहा। हम सोचें कि क्या हमारा समाज आज 'आश्रय दान' के लिए तैयार है, 'विद्यादान' के लिए तैयार है। समाज इसके लिए स्वयं को तैयार करे, बाकी रास्ते स्वयमेव खुल जाएँगे। आपको, समाज को, स्वयं ही नई दिशा और नया रास्ता दिखने लगेगा।

मैं आज देशभर के जैन समाज से आग्रह करता हूँ कि अपनी संस्थाओं में मराठी जैन, तेलुगू जैन, सराक जैन, तमिल जैन, ओडिया जैन आदि मूल निवासी जैनों को साधर्मी वात्सल्य का परिचय देते हुए प्रतिनिधित्व प्रदान करने की दिशा में कदम बढ़ाएँ। सामाजिक व धार्मिक कार्यक्रमों में भोजन आदि की अलग-२ व्यवस्थाएँ न करते हुए साथ-२ ही भोजन करने की परिपाटी आरंभ करें वरना आने वाले समय में हम इन मूल निवासी जैनों को जैन धर्म की परंपरा से दूर कर देंगे। क्या हम सम्यक्दर्शन के साधर्मी वात्सल्य अंग का पालन करने की दिशा में कदम नहीं उठाएँगे?

अध्यक्ष कार्यालय के संपर्क सूत्र :
प्रवीण जैन, मो नं. : 7506735396
ईमेल : info@prabhatji.com
वेब साइट : www.Prabhatji.com

प्रभातचंद्र जैन
(राष्ट्रीय अध्यक्ष)

देश का नाम एक ही है - भारत।

जैसा कि आप सभी जानते हैं कि संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के आशीर्वाद एवं प्रेरणा से देशभर में भारत बने भारत अभियान चलाया जा रहा है जिसके अंतर्गत देश का नाम सभी भाषाओं में "भारत" किए जाने, भारत की भाषाओं का पुनरोत्थान, भारत की संस्कृति और परंपराओं की पुनर्स्थापना की पहल की गई है।

हमारे देश का नाम भारत प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव के पुत्र चक्रवर्ती सम्राट भरत के नाम से भारत प्रचलित हुआ, यही हमारे देश का सबसे प्राचीन और गौरवशाली नाम था, है और रहेगा। अंग्रेजों के आने के बाद देश का नाम इंडिया कहा जाने लगा और अंग्रेजों के सभी दस्तावेजों में यही नाम दर्ज हुआ। अंग्रेजों ने इसी नाम को हमारे देश का आधिकारिक नाम घोषित कर दिया और फिर तब से विश्व हमारे देश को इंडिया नाम से जानता और पुकारता है। दुनिया को पता ही नहीं है कि हमारे देश का मूल नाम इंडिया नहीं बल्कि भारत है। 15 अगस्त 1947 को देश स्वतंत्र हुआ पर देश का नाम इंडिया ही चलता रहा, 26 जनवरी 1950 को भारत का संविधान लागू हुआ, उसमें भी देश के दो नामों को मान्यता दी गई भारत और इंडिया। चूँकि भारत अंग्रेजों की पराधीनता से स्वाधीन हुआ ही था, राजकाज की संपूर्ण व्यवस्था अंग्रेजी भाषा में ही चल रही थी तो देश की सभी महत्वपूर्ण संस्थाओं, विभागों, प्रतिष्ठानों के नाम अंग्रेजी में रखे गए और वे नाम लोगों के मुँह पर चढ़ गए। राष्ट्रीय महत्व के इन सभी संस्थानों के नामों में इंडिया और इंडियन शब्दों का ही प्रयोग किया गया। इसी प्रकार सभी सरकारी दस्तावेज, कानून अंग्रेजी में ही बनते थे और बनते हैं तो उनमें आज भी इंडिया या इंडियन शब्दों का ही प्रयोग किया जाता है। भारत सरकार के किसी भी मूल दस्तावेज में देश का नाम भारत प्रयोग नहीं किया जाता है बल्कि इंडिया ही लिखा जाता है क्योंकि भारत सरकार का हरेक मूल दस्तावेज आज भी अंग्रेजी में तैयार किया जाता है। जबकि इन सरकारी दस्तावेजों व कानूनों का अनुवाद देश की राजभाषा हिन्दी में होता है तब उनमें इंडिया के अनुवाद के रूप में भारत शब्द का प्रयोग किया जाता है। ध्यातव्य है कि संविधान में ऐसा कहीं नहीं लिखा है कि हिन्दी में देश का नाम भारत होगा और अंग्रेजी में इंडिया।

पर सरकारी अधिकारियों ने भारत नाम को हिन्दी से जोड़ दिया और इंडिया नाम को अंग्रेजी से, इसके पीछे उनका उद्देश्य यही रहा कि इंडिया नाम ही प्रचलन में बना रहेगा और हुआ भी यही। आज भारत नाम लगभग प्रयोग से बाहर हो चुका है, क्या गाँव क्या शहर, लोगों की जुबान पर गुलामी का प्रतीक इंडिया नाम ही चढ़ा है। भारत नाम सुनाई ही नहीं देता है। स्थिति तो ऐसी निर्मित हो गई है कि भारत नाम सुनकर लोग नाक-भौं सिकोड़ने लगते हैं। बैंकों आदि के आवेदनों में भारत Bharat या भारतीय Bharatiya लिखने का विकल्प ही नहीं होता है और यदि कोई लिख दे तो उसका आवेदन लौटा दिया जाता है। यह सचमुच कितना शर्मनाक विषय है कि हमारे देश का अपना गौरवशाली नाम ही देश में स्वीकार नहीं किया जा रहा है।

परंतु हमारे गुरुदेव का उपदेश है कि हमें विदेशियों द्वारा प्रचारित अर्थहीन इंडिया नाम को हटाकर देश का नाम भारत पुनः स्थापित करना है भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी देशभर के सभी साधर्मी बंधुओं, साधर्मी व्यापारियों, जैन संस्थानों, जैन कवियों, जैन लेखकों व जैन प्रशासनिक अधिकारियों का विनम्र आह्वान करती है कि आप देश का नाम भारत ही बोलने, लिखने और छापने का संकल्प लें और अपने प्रभाव क्षेत्र में इस अभियान को जन-जन तक पहुँचाने में अपना योगदान दें।

आपके नगर-गाँव-शहर में इस अभियान को गति दी जा सकती है इसलिए हम आपसे अनुरोध करते हैं कि आप इस अभियान की प्रचार-सामग्री (पोस्टर, बैनर, होर्डिंग आदि) को जगह-2 प्रदर्शित करवाएँ, इस संबंध में बच्चों के बीच पोस्टर, वाद-विवाद, नुक्कड़ नाटक आदि की प्रतियोगिताओं का आयोजन आप कर सकते हैं। भारत में आयोजित होने वाले अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट मैचों में आप स्वयं या आपके स्वयंसेवक जाकर भारत नाम छपे हुए बैनर-पोस्टर-ध्वज लहरा कर आम जनता का ध्यान इस ओर आकर्षित कर सकते हैं।

आशा है आप इस अभियान को गति प्रदान करने में सहयोगी बनेंगे ताकि आचार्यश्री विद्यासागर जी महाराज की भावना के अनुरूप भारत के पुनर्निर्माण का संकल्प पूरा करने में जन-जन सहभागी बन सके। अभियान की समग्र जानकारी पत्रिका में प्रकाशित की जा रही है और यह हमारी वेबसाइट पर उपलब्ध रहेगी।

राजेन्द्र के. गोधा

राजेन्द्र के. गोधा
राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष व महामंत्री
प्रधान संपादक, तीर्थवंदना

जैन तीर्थवंदना

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी एवं
भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र ट्रस्ट का

मुखपत्र

वर्ष 10 अंक 11 फरवरी 2021

श्री प्रभातचन्द्र जैन	अध्यक्ष
श्री राजेन्द्र गोधा	कार्याध्यक्ष/महामंत्री
श्री शिखरचन्द पहाड़िया	वरिष्ठ उपाध्यक्ष
श्री वसंतलाल दोशी	उपाध्यक्ष
श्री प्रदीप जैन (पी.एन.सी.)	उपाध्यक्ष
श्री गजराज गंगवाल	उपाध्यक्ष
श्री तरुण काला	उपाध्यक्ष
श्री के.सी. जैन(काला)	कोषाध्यक्ष
श्री नीलम अजमेरा	मंत्री
श्री विनोद कोयलावाले	मंत्री
श्री खुशाल जैन (सी.ए.)	मंत्री
श्री जयकुमार जैन (कोटावाले)	मंत्री

संपादकीय सलाहकार

पद्मश्री डॉ.कैलाश मड़वैया
डॉ.श्रीमती नीलम जैन
डॉ.अनेकांत जैन
पंडित श्री अरुणकुमार जैन, शास्त्री

परामर्श मंडल

श्री जयकुमार जैन (कोटावाले)
श्री शरद जैन
श्री विनोद बाकलीवाल
श्री कमलबाबू जैन
श्री सुरेश सबलावत

संपादक मंडल

प्रधान संपादक
श्री राजेन्द्र के.गोधा

संपादक-साज सज्जा — श्री मनीष वैद
संपादक — श्री उमानाथ रामअजोर दुबे

उप संपादक
श्री किरण प्रकाश जैन
श्री लवकेश जैन
श्री प्रवीण जैन(सी.एस.)
श्री विजय धुर्रा

कार्यालय
भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी
हीराबाग, सी.पी.टैंक, मुंबई 400 004.
फोन : 022-2387 8293 फैक्स: 022-23859370
website : www.tirthkshetracommittee.com
e-mail : tirthvandana4@gmail.com
whatsapp no.- 7718859108

मूल्य

वार्षिक	:	300 रुपये
त्रिवार्षिक	:	800 रुपये
आजीवन (दस वर्ष)	:	2500 रुपये

Navagarh: Antiquities from the Chandel period	7
तीर्थंकर ऋषभदेव के कृषि ज्ञान से समृद्ध हो गई थी जनता	10
जिन दर्शन से निज दर्शन कर आत्मा हित को पाना ही वास्तविक मेला	12
समसगढ़ - जैन मंदिर	12
दिगंबर जैन तीर्थ मेलसित्तामूर (जैन मठ - जिनकांची), तमिलनाडु	14
ग्राम महेशपुर जिला-सरगुजा, छत्तीसगढ़ में 8वीं-13वीं सदी का प्राचीन जैन तीर्थ	16
सेडम जिला- गुलबर्गा कर्नाटक का १२ वीं सदी का पुरातन जैन मंदिर	17
वर्तमान समय में तीर्थक्षेत्रों की उपयोगिता क्या है	20
भगवान के चरणों के प्रति अत्यंत राग होता है तब सम्यग्दर्शन होता है	22
श्री सम्मेदशिखर पर्वत पर साफ-सफाई का कार्य पूर्ण	31
यात्री निवास जीर्णोद्धार कार्य प्रारम्भ	32

विशेष निवेदन

तीर्थक्षेत्र कमेटी के सभी सदस्यों से निवेदन है कि वह अपने नाम एवं स्थान के साथ मोबाइल तथा ई मेल तीर्थक्षेत्र कमेटी को tirthvandana4@gmail.com पर भिजवाने की कृपा करें जिससे भविष्य में ई मेल अथवा मोबाइल पर अन्य विषयों की जानकारी तथा बैठकों आदि की सूचनाएं भिजवाई जा सके।

मंत्री

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के सदस्य बनकर तीर्थों के संरक्षण-संवर्धन और उनके विकास में मार्ग दर्शन दीजिये

संरक्षक सदस्य	रु. 5,00,000/-	सम्माननीय सदस्य	रु. 31,000/-
परम सम्माननीय सदस्य	रु. 1,00,000/-	आजीवन सदस्य	रु. 11,000/-

नोट:

1) कोई भी फर्म, पेढ़ी, कम्पनी, धर्मादाय ट्रस्ट, संयुक्त कुटुम्ब, सोसायटी भी उपर्युक्त प्रावधान के अंतर्गत सदस्य बन सकेंगे। इस प्रकार की सदस्यता केवल 25 वर्षों के लिये होगी।
2) जो सदस्य आयकर की छूट चाहेंगे उन्हें 80जी के अंतर्गत कुछ रकम पर 80जी का लाभ मिलेगा।
3) सदस्यता से प्राप्त राशि ध्रुवफण्ड में जमा रहेगी उसके ब्याज की आय ही व्यवस्थापन एवं तीर्थक्षेत्र के संरक्षण, संवर्धन तथा उनके जीर्णोद्धार में व्यय की जायेगी।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी को प्रेषित की जाने वाली राशि बैंक ऑफ बड़ौदा, वी. पी. रोड, मुंबई के सेविंग खाता क्र. 13100100008770, IFSC CODE BARB0VPROAD अथवा बैंक ऑफ इंडिया, सी. पी. टैंक, मुंबई के खाता क्रमांक 001210100017881, IFSC CODE BKID0000012 में किसी भी शाखा में निःशुल्क जमा कराकर उसकी सूचना मुंबई कार्यालय को देने की कृपा करें।

पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने हैं. सम्पादकों का इन विचारों से सहमत होना जरूरी नहीं है।

Navagarh: Antiquities from the Chandel period

Dr. Yashwant K. Malaiya,
Professor of Computer Science, Colorado State University

[Navagarh is a Jain Pilgrimage site that has developed only since 1959. It has significant Pre-historic and historic remains that have received attention only in recent years. This article discusses on the Jain antiquities of the Chandel period as well as a few that may from the early middle age.]

Its history during the Chandella period needs to be studied in conjunction with the antiquities of nearby sites, specifically Badagaon-Dhasan, Aahaar Kshetra and Papora ji, which are also pilgrimage centers as well as Bhelsi, which is mentioned by Naval Shah Chanderia's Vardhamana Purana in the sixteenth chapter. It is located at the Nabai village, about 8 km from Sojna in central India in Uttar Pradesh, Just across the border from Madhya Pradesh.

The ancient cite was noticed as a collection of sculptures and fragments on top of a platform. The site was explored by Pt. Gulabchandra Pushpa, an Ayurvedic physician (later famous as a Pratishthacharya) in 1959. The platform was actually the top of an underground chamber which concealed a beautifully polished sandstone image of 18th Teerthankar Bhagwan Arahnatha in the kayotsaraga pose.

A modern temple was later constructed at the same exact spot, with the garbhagriha left underground at the same spot. A congregational room was excavated in front of it.

In Bundelkhand, several underground chambers termed Bhoyras with concealed Chandella period Jain images have been found. According to Balbhadra Jain, these are said to be seven which include Pavaji, Deogarh, Seron, Karguvan, Bandha, Papora and Thuvon.

Navagarh should be included among them since its underground structure has been carefully preserved.

The Chandrashila, that formed the roof of the platform, has been preserved and has been fixed on a wall for display. A large number of historic sculptures are preserved in the sangrahalaya, which is housed in a dedicated room. Some of them have inscriptions that throw light the history of the spot. The mulanayaka image of Bhagwan Aranath does not have an inscription, a finely polished schist image of Bhagwan Mahavira, marked by the Lion *lanchhan*, has a well preserved inscription of samvat 1195 (1138 AD) mentions that Mahichandra of the Golapurvaanvaya, his son Delhan and their family members.

The craftsmanship of the image is very similar to those seen at the *Bhoyras* of Papora, Pava, Karguvan, Bandha etc, which appear to be from the same period based on the inscriptions, a schist (शैल) head fragment shows signs of deliberate mutilation.

There are other inscriptions of samvat.1202, that mention the Golapurvaanvaya. This suggests that the region was populated by the Golapurva Jain community. Most of the sculpture fragments are in red or brown sandstone, but a few fragments are in black schist.

It is notable that there are two large images that appear

to be from the early middle age, pethaps 8th -10th century". The craftsmanship and the conventions are different from the Chandella Period sculptures. These include an Adinath image in khadagasana and a padmasan Parshwanath image. The elbows of the Parshwanath image are spread out, which is common to padmasan images prior to 11th century. At nearby Badagaon-Dhasan.Iain complex, about 10 km, there are two large images that also appear to be from the early middle age.

There exists an unusual Jain sculpture located among the rocks in the nearby rock-strewn hills that shows a person with mustaches and beard who appears to be holding a garment in one hand and an end of a garment in the other hand. This may be a representation of a distinguished shravaka, shreshthi or King, perhaps Madan Varman.

Notably there are four columns that were brought here from a reservoir in nearby Sojna. The function of the columns is not clear. The lower parts of the columns has been roughed so that plaster can adhere to the surface. Notably the columns are inscribed with inscriptions. A reading given the Golapurva Directory

of 1940 appears to be flawed. A better reading is provided in the Golapurva Jain Samaj Ka Bharatiya Sanskrit Ko Avadana, 2019. All of them are dated Sarnvat 1203 Ashadhvadi 10 (1146 AD) and mention shravakas of the Golapurvaanvaya.

The carvings on the 4 columns show Teerthankaras with Ambika or Gomedh. It is notable that some of the panels show an Upadhyaya with a *tada-patra* book in the left hand and the right hand with the expression of preaching. The kamandalu is placed on the seat.

It is notable that the monks appear to have the pichchhi worn on the right arm with the brush raised up. This is in contrast to the modern practice, the pichchhi is either held by the fingers or is placed on the platform. There is a sculpture fragment with shows a pichchhi with the end shaped like a hook. Some of the paintings in some manuscripts show the arm inside the loop in the handle of the pichchhis. Thus It appears that the manner of carrying pichchhis in the region during the Chandella period was different.

As demonstrated by the archaeological findings, this region was a major center of Jainism in the Chandella period. Aahaarji, about 34 km from Navai, (then known as Madansagarpur) was a major pilgrimage center during the Chandella period, with the Jains from several regions visiting and installing images during the period. The communities represented were Gargarat (Gangarade), Mahishana-puravada (Maheshwari), Jaiswal, Lamechu, Mathur, Paurpatta (Parwar), Maiditaval (Medatwal), Avadhapura (Ayodhyavasi), Khandelwal, Golarade (Golalare) in addition to the local Golapurvas and Grihapatis. It demonstrates the harmonious cooperation of the Jains belonging to different communities. The two Chandella-period inscribed images in Papora bhoyra, which is about 26 km, both mention Golapurva. The Golapurvas still live in the region around Navagarh is large numbers.

All the Inscriptions at Navagarh belong to the period of Chandella ruler Madanvarman (Samvat 1186-1220). two inscribed Papora bhoyra pratimas of Sam. 1202 (1146 AD) are also front Madanvarvan's time. It should be noted that most of the Aahaar inscriptions are also from his time.

Although some of them go to the time of his grandson Parmardhi (also known as Parmal). and a few from Trailokyavarman and Viravarman's time. As described in the famous ballad Alha-Khand, Prithviraj Chauhan attacked Paramardhi in Samvat 1239 (1182-3 AD) but eventually retreated. The last Chandella period Ahar inscription is rom Samvat 1332.

Bundelkhand was attacked by lltutmish in AD 1233-34 and by Alauddin in 1293 AD.

At this time, the temples were destroyed and many pratimas were concealed in underground chambers. The Jain centers of Bundelkhand then ceased to function for a few centuries.

The archaeological and demographic information confirmed the history provided by Naval Shah Chanderia in Vardhamana Purana of Samvat 1825 (1769 AD).

He mentions a ancestor in remote antiquity settling in Chanderi village (which should not be confused with Chanderi in Ashoknagar district, which probably the village near Kudila, and then his descendants branching to four different villages.

The village Bada is likely the nearby Badagaon-Dhasan.

Navalshah's ancestors conducted a Gajrath Pratishtha at Bhelsi (41 km) in Samvat 1651 (1594 AD). His book presents the earliest available account of a Gajrath Pratishtha in Bundelkhand. Navalshah's account of his family's history is supported by the inscription in the Bhelsi temple that still exists.

The Navagarh temple complex has other vedis that include other historically significant brass and stone pratimas. They are also worth studying by the scholars.

I would like to acknowledge Br. Jaikumar Jain Nishant, a noted Pratishthacharya, for inviting me along with a group of other scholars to Navagarh and introducing me to the religious and archaeological significance of Jain antiquities at Navagarh.

References:

Balbhadra Jain, Bharat Ke Digambar Jain Tirth, 1976, Part 3, p. 105, Ibid, p. 128

Niraj Jain, Navagarh, Ek Mahatvapurna Madhyayugeen Jain Tirth, Anekanta, year 15, Issue 6, 1962, p. 177-79

Golapurva Jain Samaj Ka Bharatiya Sanskrit Ko Avadana, Ed. Surendra Kumar Jain, 2018.

Papora Darshan, Pt. Vimal Kumar Shastri, Shri Digambar jain Atishya Kshetra Papaura ji, Tikamgarh, 2014.

Yashwant Kumar Malaiya, Chandelakalin Madansagarpur ke Shravaka Anekanta, July-Sept. 1993

Yashwant Kumar Malaiya, Vardhaman Purana ke Solahven Adhikar ka Adhyayan, Anekant, 1974, pp. 58-64.

भगवान ऋषभदेव निर्वाण कल्याणक महोत्सव माघ कृष्ण चतुर्दशी पर विशेष (10 फरवरी २०२१)

तीर्थंकर ऋषभदेव के कृषि ज्ञान से समृद्ध हो गई थी जनता

-डॉ. सुनील जैन संचय, ललितपुर

भगवान ऋषभदेव जैनधर्म के प्रथम तीर्थंकर हैं। उनका जन्म चैत्र कृष्ण नवमी को अयोध्या में हुआ था, वहीं माघ कृष्ण चतुर्दशी को इनका निर्वाण कैलाश पर्वत पर हुआ। इन्हें आदिनाथ, पुरुदेव, वृषभदेव आदि अनेक नामों से भी जाना जाता है। इनके पिता का नाम राजा नाभिराय तथा माता का नाम मरुदेवी था।

वर्तमान में कृषि और किसान की चर्चा सड़क से लेकर संसद और उच्चतम न्यायालय तक में हो रही है। हमारा देश कृषि प्रधान देश है और यह आज से नहीं भगवान ऋषभदेव के जमाने से है। यह किसान ही तय करता है कि देश में महंगाई बढ़ेगी या घटेगी। हमारे देश की अर्थव्यवस्था कृषि पर ही आधारित है।

ऋषि बनो या कृषि करो का दिया संदेश :

ऋषभदेव ने कहा था कि ऋषि बनो या कृषि करो। ऋषि बनोगे तो आत्म-कल्याण करोगे और कृषि करोगे तो तुम्हारा भी पेट भरेगा और जनता का भी पेट भरेगा। भगवान् ऋषभदेव ने ही इस युग के प्रारम्भ में जब कल्पवृक्ष लुप्त होने लगे और मानव के समक्ष जीवन के अस्तित्व का प्रश्न उपस्थित हो गया तब उन्होंने मनुष्य को कर्म करने का उपदेश दिया और यह संदेश दिया कि ऋषि बनो या कृषि करो।

जैन परंपरा व ऐतिहासिक तथ्यों के अनुसार तीर्थंकर ऋषभदेव ने कृषि का सूत्रपात किया। उनके पहले इस देश में लोगों को कृषि कला का ज्ञान नहीं था।

ऋषभदेव से कृषि कर्म का उपदेश पाकर के प्रजा की बड़ी समस्या हल हो गई। व्यवस्थित कृषि का ज्ञान पाकर वे सुखी एवं समृद्ध हुए। इसी के कारण ऋषभदेव को अपने युग का प्रजापालक और लोकप्रिय शासक माना जाता है। उल्लेखनीय तथ्य यह है कि तीर्थंकर ऋषभदेव का पहचान चिन्ह वृषभ यानी बैल है।

पुरातत्वज्ञ वृषभ लांछन से ऋषभदेव की मूर्तियों की पहचान करते हैं। उस काल से आज तक कृषि का मूलाधार वृषभ (बैल) ही है। ऋषभदेव का एक नाम वृषभदेव भी है।

कृषि कर्म का उपदेश महत्वपूर्ण था, क्योंकि आगे की संपूर्ण व्यवस्था उसी पर आधारित थी। भूखा व्यक्ति कौन-सा पाप नहीं करता? यदि उदरपूर्ति न होती तो मनुष्य पशु-पक्षियों का भक्षण करता एवं अंत में मनुष्य-मनुष्य का। फिर कौन बात करता ग्राम एवं समाज व्यवस्था की, संस्कृति संरक्षण की, शिल्पकलाओं एवं लिपि विद्याओं की, व्यापार एवं लोकोपकार की। कृषि का उपदेश देकर सदमार्ग उन्होंने प्रशस्त किया।

आंतरिक चेतना को जगाया :

भगवान ऋषभदेव का संदेश था कि मनुष्य के अस्तित्व के लिए रोटी, कपड़ा और मकान जैसी चीजें आवश्यक हैं, किंतु यह अधूरी संपन्नता है। उसमें अहिंसा, सत्य, संयम, समता, साधना और तप के आध्यात्मिक मूल्यों की आंतरिक संपन्नता भी जुड़नी चाहिए। प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव ने भारतीय संस्कृति को बहुत कुछ दिया है। उन्होंने जहां समाज को विकास का मार्ग सुझाया, वहीं अहिंसा, संयम तथा तप के उपदेश द्वारा समाज की आंतरिक चेतना को भी जगाया।

ऋषभदेव ने अनेकानेक शिल्पों की अवधारणा की। कृषि और उद्योग में अद्भुत सामंजस्य स्थापित किया कि धरती पर स्वर्ग उतर आया।

कर्मयोग की वह रसधारा बही कि उजड़ते और वीरान होते जन -जीवन में सब ओर नव बंसत खिल उठा। जनता ने अपना स्वामी उन्हें माना और धीरे-धीरे बदलते हुए समय के अनुसार वर्ण व्यवस्था, दण्ड व्यवस्था, विवाह आदि सामाजिक व्यवस्था का निर्माण हुआ। उन्होंने समाज को उनके कर्तव्यों की ओर उन्मुख किया।

आदर्श दण्ड संहिता के निर्माता :

प्रशासनिक कार्य में इस भारत भूमि को उन्होंने राज्य, नगर, खेट, कर्वट, मटम्ब, द्रोण मुख तथा संवाहन में विभाजित कर सुयोग्य प्रशासनिक, न्यायिक अधिकारों से युक्त राजा, माण्डलिक, किलेदार, नगर प्रमुख आदि के सुर्पुद किया। आपने आदर्श दण्ड संहिता का भी प्रावधान कुशलता पूर्वक किया।

ज्येष्ठ पुत्र भरत के नाम से इस देश का नामकरण 'भारतवर्ष' : पौराणिक, साहित्यिक एवं पुरातात्विक साक्ष्यों के सप्रमाण उल्लेख से यह सिद्ध किया है कि इन्हीं प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव के ज्येष्ठ पुत्र भरत के नाम से इस देश का नामकरण 'भारतवर्ष' इन्हीं की प्रसिद्धि के कारण विख्यात हुआ। इतना ही नहीं, अपितु कुछ विद्वान भी संभवतः इस तथ्य से अपरिचित होंगे कि आर्यखण्ड रूप इस भारतवर्ष का एक प्राचीन नाम नाभिखण्ड 'अजनाभवर्ष' भी इन्हीं ऋषभदेव के पिता 'नाभिराय' के नाम से प्रसिद्ध था।

अतः यथा शीघ्र हमारे देश से इंडिया हटाकर भारतवर्ष नामकरण होना चाहिए क्योंकि यही नाम है जो हमें ब्रिटिश शासकों की दासता भरी यादों से मुक्त करता है और गौरवपूर्ण इतिहास का स्मरण दिलाता है।

भारतीय संस्कृति के आद्य प्रणेता :

तीर्थंकर ऋषभदेव भारतीय संस्कृति के आद्य प्रणेता माने जाते हैं। वेदों, उपनिषदों और पुराणों में समागत उनके उल्लेख यह कहने के लिए पर्याप्त हैं कि ऐसे महापुरूष थे

जिन्होंने असि , मसि , कृषि , विद्या , वाणिज्य एवं शिल्प - इन षड् विद्याओं का उपदेश युग के प्रारम्भ में देकर कर्मभूमि की सामाजिक व्यवस्थाओं का सूत्रपात किया था। किसी भी व्यक्ति और समुदाय के लिए इन प्रकल्पों की शिक्षायें आगे बढ़ाने के लिए अनिवार्य होती हैं।

विश्व के प्राचीनतम लिपिबद्ध धर्म ग्रंथों में से एक वेद में तथा श्रीमद्भागवत इत्यादि में आये भगवान ऋषभदेव के उल्लेख तथा विश्व की लगभग समस्त संस्कृतियों में ऋषभदेव की किसी न किसी रूप में उपस्थिति जैनधर्म की प्राचीनता और भगवान ऋषभदेव की सर्वमान्य स्थिति को व्यक्त करती है।

हड़प्पा एवं मोहनजोदड़ो की खुदाई से प्राप्त मूर्तियों को पुरातत्व विभाग ने ऋषभदेव की मूर्तियां बताया है। भारत के राष्ट्रपति एवं प्रसिद्ध दार्शनिक डॉ राधाकृष्णन ने अपने भारतीय दर्शन के इतिहास में लिखा है कि "जैन परंपरा ऋषभदेव से अपनी उत्पत्ति का कथन करती है जो बहुत सी शताब्दियों के पूर्व हुए हैं"। महाभारत के अनुशासन पर्व में भी ऋषभदेव का नाम आया है। वैदिक साहित्य में भगवान ऋषभदेव को जैन धर्म का आदि प्रवर्तक माना गया है। डॉ. एन एन बसु ने सिद्ध किया है कि लेखन कला और ब्राह्मी विद्या का आविष्कार ऋषभदेव ने किया था। विभिन्न साक्ष्यों द्वारा यह

पुष्टि हो जाती है कि ऋषभदेव भारतीय संस्कृति के प्रथम वरिष्ठ महापुरुष थे। मानवीय गुणों के विकास की सभी सीमाएं ऋषभदेव ने उद्घाटित की।

आज अधिक प्रासंगिक हैं उनकी शिक्षाएं :

तीर्थंकर ऋषभदेव द्वारा प्रतिपादित सिद्धांत तथा शिक्षाएं आज पहले से कहीं अधिक प्रासंगिक और उपयोगी हैं तथा भविष्य के विश्व संस्कृति के लिए आधार हैं।

भारतीय संस्कृति के प्रणेता एवं जैनधर्म के प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव की जनकल्याणकारी शिक्षा द्वारा प्रतिपादित जीवन-शैली, आज के चुनौती भरे माहौल में उनके सामाजिक एवं राजनीतिक विचारों की प्रासंगिकता है।

आज मानवता के सम्मुख भौतिकवादी चुनौतियों के कारण नाना प्रकार के सामाजिक एवं मानसिक तनाव तथा संकट व्यक्तिगत, सामाजिक एवं भूमण्डल स्तर पर दृष्टिगोचर हो रहे हैं। उनके द्वारा प्रतिपादित ज्ञान-विज्ञान की विभिन्न क्षेत्रों में ऐसी झलकियां मिलती हैं जिन्हें रेखांकित करके हम अपने सामाजिक एवं राजनैतिक जीवन की गुणवत्ता को बढ़ा सकते हैं।

माघ कृष्ण चतुर्दशी को मोक्ष कल्याणक :

जैन समुदाय प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव के निर्वाण कल्याणक महोत्सव को बड़े ही धूमधाम से श्रद्धा-भक्ति के साथ मनाता है। इस दिन पूरे देश में उनकी विशेष अभिषेक-शांतिधारा, पूजा-विधान कर उनके चरणों में निर्वाण लाडू समर्पित करते हैं।

जिन दर्शन से निज दर्शन कर आत्मा हित को पाना ही वास्तविक मेला

- पं. देवेश शास्त्री बलेह

भारत देश में मेलों का आयोजन बड़े ही हर्षोल्लास पूर्वक किया जाता है और सभी जन मेलों का आनंद भी खूब लेते हैं, किसी भी मेले का अपना ही एक अलग महत्व होता है। मेला एक ऐसा स्थान है, जहाँ पर लोग अपनी दैनिक जीवन के सभी कष्टों को भूल कर कुछ क्षण के लिए अपने बचपन में आनंदमय होकर खो जाते है। मेला शब्द का शाब्दिक अर्थ तो आयोजन होता है यदि हम इस आयोजन के व्यावहारिक पक्ष को देखें तो ज्ञात होता है कि आपस में एक दूसरे से मिलना, वार्तालाप करना, सम्बन्धों को मजबूत करना आदि।

लेकिन यदि इसे पारमार्थिक दृष्टि से देखें तो ज्ञात होता है कि मन के मेल को अर्थात् राग द्वेष आदि से निर्वृत्त होना।

संसार के समस्त प्राणियों से मिलने से आत्म कल्याण नहीं होता बल्कि अपनी आत्मा का आत्मा से मिलन होने से होगा। संसार के समस्त चराचर पदार्थों को हेय समझने और ***पर से निज*** की ओर परिणति को लाने का नाम वास्तविक मेला है!

और इस प्रकार के मेले विभिन्न जैन तीर्थ क्षेत्रों पर भी आयोजित किए जाते हैं जिनका महत्व अपने आप में अलग है और अलग ही पहचान है।

तीर्थ यानी जिस स्थान से तरा जाये, संसार सागर से पार हुआ जाये, सच्चे सुख का आभास किया जाये, उसे प्राप्त करने के उपाय किये जायें, उसे हम तीर्थ कहते हैं।

तीर्थक्षेत्र तीन प्रकार के होते हैं सिद्ध क्षेत्र, अतिशय क्षेत्र, कल्याणक क्षेत्र।

१. जहाँ से मुनियों ने तपश्चरण करके सिद्ध पद को प्राप्त किया वह स्थान सिद्ध क्षेत्र कहलाते है।
२. जहाँ जिनमन्दिरों मे देवोपुनीत अतिशय जिनधर्म प्रभावना की गई हो वह अतिशय क्षेत्र है।
३. वह स्थान जहाँ पर तीर्थंकर भगवान के कल्याणक मनाये गये हो वह कल्याणक क्षेत्र है।

हम आप सभी क्षेत्रों पर पवित्र भावना लेकर आते है पापों का प्रक्षालन करने के उद्देश्य से आते है क्योंकि तन की पवित्रता बाह्य पदार्थों से नहीं बल्कि प्रभु नाम स्मरण से, गुणाराधन से, निज ध्यान से, आत्म ध्यान से ही आती है मंत्र लगाने से आती है।

जिन दर्शन से निज दर्शन कर आत्मा के हित को प्राप्त करना सच्चे सुख को प्राप्त करने का नाम मेला है।

तीर्थ परिचय

समसगढ़ - जैन मंदिर

माना जाता है कि समसगढ़, भोपाल से लगभग २० किलोमीटर दूर रातीबड़ के पास, एक जैन संत (मुनि) द्वारा खोजा गया था। कहा जाता है कि यह स्थान एक पुराने जैन मंदिर के लिए प्रसिद्ध था। अब समसगढ़ में, एक दर्जन परमार युग के मंदिरों के अवशेष पाए जा सकते हैं जिनमें शिव मंदिर और विष्णु मंदिर, जैन तीर्थंकरों की सैकड़ों मूर्तियाँ, जैन मंदिर के अवशेष आदि हैं। दो पुराने पानी के तालाब भी समसगढ़ के पास स्थित हैं। इस जगह की खोज ७० साल पहले एक जैन मुनि ने की थी।

समसगढ़ पुराने जैन मंदिर के लिए जाना जाता था, लेकिन अब परमार युग मंदिर की मूर्तियों और खंडहरों के लिए जाना जाएगा जो हाल ही में वहां पाए गए थे। यह पहली बार है कि परमार युग के इतने सारे अवशेष राजधानी के पास पाए गए हैं। मीडिया प्रचार के बावजूद वे अभी भी असुरक्षित और असत्यापित हैं। यदि किसी को साइट पर जाना है तो स्थानीय लोगों पर निर्भर रहना होगा जो केवल यह जानते हैं कि कुछ मूर्तियाँ जो हाल ही में अखबार में थीं, उनके गाँव में मिली हैं।

खंडहर एक दर्जन मंदिर स्थित हैं, जिनमें शिव मंदिरों, विष्णु मंदिरों और अन्य मंदिरों के प्रतीकों को पुराने जैन मंदिर के पास स्थित स्थान पर

पहचाना जा सकता है। खंडहर का सुझाव है कि ये मंदिर परमार-युग के होंगे जो किसी कारण से नष्ट हो गए होंगे। इतिहासकारों का मानना है कि परमार राजा भोज द्वारा राज्य की राजधानी के आसपास के क्षेत्रों पर शासन किया गया था और ये खंडहर निश्चित रूप से उनके संरक्षण में रहे होंगे। हिंदू, मंदिरों के अलावा जैन मंदिरों के खंडहर भी आसानी से पहचाने जा सकते हैं। साइट के पास दो पुराने पानी के तालाब / कुएं हैं।

ऐसी मान्यता हैं की पूर्व में जैन समाज की बहुलता थी ,बड़ा शहर नजदीक होने से वहां से लोग विस्थापित हुए होंगे क्योकि इतनी अधिक मात्रा में मंदिरों का दर्शाना इस बात की पुष्टि करता हैं।

अभी अभी मुनि श्री अजित सागर जी महाराज ससंघ विराजे और पंचकल्याणक हुए।

विद्यावाचस्पति डॉ. अरविन्द प्रेमचंद जैन , भोपाल

समाचार

कर्नाटक के हासन जिले में जमीन में दबा मिला होयसल कालीन जैन मंदिर

बेलूर (कर्नाटक), 10 फरवरी (भाषा) भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई) ने कर्नाटक के हासन जिले में होयसाल काल के प्राचीन जैन मंदिर का पता लगाया है। एएसआई अधिकारी ने बुधवार को यह जानकारी दी। अधिकारी ने बताया कि संभवत: यह जैन मंदिर है, यह प्राचीन ढांचा विशाल मंच पर बना है जिस पर जटिल कलाकृतियां उकेरी गई हैं जो होयसाल काल की विशेषता रही हैं। उन्होंने बताया कि मंदिर बेलुर तालुका के हलेबेडू के पास शांतिनाथ बसदि में मिला है। अधिकारी ने बताया कि यह खोज महत्वपूर्ण है क्योंकि यह दिखाती है कि होयसाल शासकों ने जैन धर्म को भी आश्रय दिया। एएसआई के क्षेत्रीय निदेशक (दक्षिण क्षेत्र) डॉ.जी माहेश्वरी के नेतृत्व में टीम ने 20 जनवरी को उत्खनन का काम शुरू किया। बेंगलुरु परिक्षेत्र में एएसआई के पुरातत्व अधीक्षक शिवकांत बाजपेयी ने 'पीटीआई-भाषा' को बताया, " टीला 30 मीटर गुना 20 मीटर है। हमनें मंदिर के निचले हिस्से की खुदाई की है और कई कलाकृतिया एवं मूर्तियां वहां से मिली हैं। यह जैन मंदिर लग रहा है।" उन्होंने कहा कि यह महज शुरुआत है और नजदीक में कुछ बड़े मंदिर भी हो सकते हैं। उल्लेखनीय है कि होयसाल राजवंश ने 12वीं से 14वीं शताब्दी तक इस इलाके पर राज किया था और उस समय के सभी संप्रदायों को सरंक्षण प्रदान किया था।

The Archaeological Survey of India (ASI) has unearthed an ancient temple of Hoysala era near Belur in Hassan district

Ancient Jain Statue Found During Archaeological Excavation in Koraput

Koraput, Odisha: An ancient statue believed to be representing Jainism has been reportedly discovered on 11 December 2020 during a temple restoration and excavation of nearby sites at Subai, a place of archaeological importance in Koraput district.

According to reports, State Archaeology department has been undertaking restoration of neglected shrines in the district. During the restoration of the Subai Jain temple, excavators discovered a statue and some remains of temples, a few distances away from the Jain temple.

Gopinath Bisoyi, the contractor engaged in the site excavation said, "We were completely unaware of existence of another temple nearer to the mentioned site. While excavating the proximity areas, we discovered a precious statue. There are chances of getting more valuable artefacts and ancient statues if further excavation is carried out in the surrounding areas."

"We got the information about one ancient Jain statue being discovered from the excavation site in Subai. We will conduct a comprehensive study on the sculpture and preserve it at Koraput Museum," Akshay Kumar Sethi, the District Culture Officer of Koraput told.

"Although, it has been excavated from a Jain temple, superficially, the sculpture appears like a statue of 'Lord Vishnu'. After a detailed study and examination we might be able to arrive at any conclusion regarding its identity and Geologic Time Scale (GTS)," Sethi added.

Priyabrata Patra, a local history researcher said, "Koraput beholds a rich cultural identity since the reign of Nanadapur ruler Vijaya Chandraksha Deo. He was under the subsidiary alliance of Puri rulers and often sent soldiers in the time of need."

"When Vijaya Chandraksha shifted his capital from Nandapur to Jeypore, it is believed that he converted himself into Jain and erected many temples during the era. For many years, the temples remained intact, however, people from tribal communities took the statues to different areas with belief that they were statues of 'Lord Shiva'," Patra further added.

१. दिगंबर जैन तीर्थ मेलसित्तामूर (जैन मठ - जिनकांची), तमिलनाडु

- सचिन जैन, बड़ौत

महत्व : यहाँ पर एक अद्भुत और विलक्षण प्रतिमा विराजमान है, भगवान नेमिनाथ जी की प्रतिमा की विशेषता यह है कि सामने से देखने पर तो प्रतिमा खड्गासन है और पीछे से देखने पर प्रतिमा पद्मासन प्रतीत होती है।

मंदिर जी के मूलनायक श्री 1008 पार्श्वनाथ जी हैं। यह क्षेत्र तमिलनाडु में सर्वाधिक समृद्ध, विशाल एवं कला से परिपूर्ण है। प्राचीन भव्य सात मंजिला प्रवेशद्वार जिसे गोपुर कहा जाता है। मंदिर जी की शिल्प कला इतनी आकर्षक है कि इस पर शोध किया जा सकता है।

पता : ग्राम- मेलसित्तामूर जैन मठ, तहसील - टिंडीवनम, जिला- विलुप्पुरम, तमिलनाडु - 604206

सुविधाएं : यहाँ वर्तमान में यात्री निवास नहीं है पर निकट ही अतिशय क्षेत्र अरिहंतगिरि व पोन्नूरमलै में सर्वसुविधायुक्त धर्मशालाएँ हैं।

निकटवर्ती तीर्थ क्षेत्र : अरिहंतगिरि, पोन्नूरमलै

संपर्क सूत्र :
9443520000, 04145 - 235325

२. अतिशय क्षेत्र हुमचा पद्मावती के अद्वितीय भगवान पार्श्वनाथ

यह प्रतिमा जी अतिशय क्षेत्र हुमचा पद्मावती, कर्नाटक में स्थित है-

श्री पार्श्वनाथ भगवान की यह प्रतिमा उत्तर पुराण में वर्णित पार्श्वनाथ चरित्र के अनुसार है। प्रतिमा जी में जो विशेषता है वह यह है कि इसमें पद्मावती ने भगवान के ऊपर छत्र लगाया हुआ है ना कि भगवान को अपने ऊपर बैठाया है। जैसा कि आजकल की अनेक प्रतिमाओं में देखने को मिलता है। उत्तर पुराण में यही वर्णन है। भारत में तीर्थंकर पार्श्वनाथ जी की मात्र कुछ ही ऐसी प्रतिमाएँ हैं जो कि उत्तर पुराण के अनुसार है। जैसे : कटनी, हुमचा पद्मावती आदि।

इस प्रतिमा को ध्यान से देखिए। इस प्रतिमा पर शिल्पकार ने अद्भुत कारीगरी की है। प्रतिमा के दोनों ओर कमठ ने अलग-अलग रूप बनाकर मुनि पार्श्वनाथ पर जो उपसर्ग किया था, वह दर्शाया गया है। भगवान के केवलज्ञान होने पर कमठ को अपने अपराध का अनुभव हुआ और वह अपनी भार्या के साथ भगवान के चरणों में बैठ गया, इसे भी प्रतिमा जी में दर्शाया गया है। इस तरह की शिल्पकला भारत मे संभवतः किसी और प्रतिमा जी में नहीं है। प्रतिमा लगभग सातवीं शताब्दी की है।

३. श्री दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र नवागढ़ , जिला ललितपुर, उत्तर प्रदेश

क्षेत्र परिचय : यह क्षेत्र विश्व में तीर्थंकर अरनाथ भगवान का एकमात्र अतिशयकारी क्षेत्र है। मूलनायक प्रतिमा प्राचीन 4 फीट 9 इंच ऊँचाई की भोयरे में स्थापित है। कृपया सभी महानुभाव दर्शन हेतु अवश्य पधारें।

मार्ग : दिल्ली-मुंबई रेलमार्ग पर स्थित ललितपुर की तहसील महरौनी से साजना होकर 25 किलोमीटर दूरी पर स्थित है।

सुविधाएँ: क्षेत्र में सर्वसुविधा युक्त धर्मशाला है।

निकटवर्ती तीर्थ क्षेत्र : आहार जी, पपौरा जी, द्रोणगिरि, बानपुर, नैनागिरि, कारीटोरन, फलहोडी बड़ागाँव आदि।

४. सिद्धक्षेत्र श्री गिरनार जी की यात्रा ऐसे करें

यदि आप पैदल जाते हैं तो सुबह 4:00 बजे तलहटी से चढ़ाई शुरू कीजिए और सीधे पाँचवी टोंक पर जाइए। उसके पश्चात क्रमशः चौथी, तीसरी, दूसरी, पहली टोंक के दर्शन करते हुए पहाड़ के पीछे की ओर से शेषावन जाइये।

यहाँ पर नेमिनाथ भगवान के तप और ज्ञान कल्याणक के चरण चिन्ह विराजमान हैं। इसके बाद तलहटी पर वापस आ जाइए। इस तरह आपकी गिरनार जी की यात्रा सम्पूर्ण हो जायेगी।।

जानकारी के अभाव में अधिकतर यात्री केवल मोक्ष कल्याणक स्थान के ही दर्शन कर पाते है, शेष दो कल्याणक तप और ज्ञान कल्याणक के स्थान रह जाते हैं।

५. श्री शान्तिगिरि अतिशय क्षेत्र, आमीगाँव (ग्वालियर)

महत्व : इस क्षेत्र पर अनेक अतिशय होते रहते हैं। मूलनायक पंचम चक्रेश्वर श्री शांतिनाथ भगवान जी, श्री अरनाथ जी, श्री कुन्थुनाथ जी एवं प्रथम तीर्थंकर श्री आदिनाथ भगवान की खड्गासन प्रतिमाएँ यहाँ मूल रूप में विराजमान है। जिनका रूप देखते ही बनता है।

कुछ समय पूर्व भगवान महावीर स्वामी की नवीन प्रतिमा भी स्थापित की गई है।

मार्ग: यह ग्वालियर से 25 किलोमीटर की दूरी पर शिवपुरी रोड पर मुख्य मार्ग से 3 किमी अंदर स्थित है।

सुविधाएँ : निकट ही अतिशय क्षेत्र पनिहार में सर्वसुविधायुक्त धर्मशाला है।

निकटवर्ती तीर्थ क्षेत्र : पनिहार, बरई, स्वर्ण मंदिर, गोपाचल पर्वत, सोनागिर जी।।

संपर्क सूत्र : 9425137217, 7987374118

ग्राम महेशपुर जिला-सरगुजा, छत्तीसगढ़ में 8वीं-13वीं सदी का प्राचीन जैन तीर्थ

महेशपुर चारों ओर घने जंगलों से घिरा और रेण (रिहंद) नदी के किनारे स्थित आज एक छोटा सा ग्राम है जो कि बिलासपुर-अंबिकापुर सड़क मार्ग पर तहसील मुख्यालय उदैपुर से उत्तर पूर्व की ओर लगभग 10 किमी की दूरी पर स्थित है। अंबिकापुर से यह स्थल लगभग 40 किमी की दूरी पर है और सड़क मार्ग से जुड़ा हुआ है।

महेशपुर छत्तीसगढ़ के ऐतिहासिक स्थानों में से एक है। मौर्यकालीन नाट्यशाला और अभिलेख के लिए विख्यात रामगढ़ के सन्निकट रेण (रिहंद) नदी के तटवर्ती क्षेत्र में 8वीं सदी ईस्वी से 13वीं सदी ईस्वी के मध्य कला संस्कृति का अभूतपूर्व उत्कर्ष हुआ। इस काल के स्थापत्य कला के भग्नावशेष महेशपुर और कलचा-देवगढ़ तक विस्तृत हैं। शैव, वैष्णव तथा जैन धर्म से संबंधित कलाकृतियाँ और प्राचीन टीलों की संख्या की दृष्टि से महेशपुर पुरातात्त्विक दृष्टि से काफ़ी महत्त्वपूर्ण है। महेशपुर गाँव में कलचुरी राजाओं के काल के 10 से अधिक टीलों की खुदाई में सदियों पुरानी मूर्तियाँ और मंदिर के अवशेष मिले हैं। इन स्थानों पर निर्मित मंदिर वास्तुकला के अनुरूप है। मंदिरों के मंडप, गर्भगृह आदि नागर शैली में निर्मित हैं।

महेशपुर किसी समय एक समृद्ध नगर या बड़ा ग्राम हुआ करता था। वहाँ 5.7 मंदिरों के अवशेष ऊपर से ही दिखाई दे रहे थे जो कि ज़मीन से 2.3 फ़ीट ऊपर ही थे। नवंबर 2003 में महेशपुर की पुरातत्त्वीय धरोहरों की विस्तृत श्रृंखला को प्रकाश में लाने के लिए किए गए उत्खनन से यहाँ एक मंदिर की खुदाई के दौरान 8 वीं शताब्दी की ऋषभदेव भगवान की 3.5 फ़ीट पद्मासन प्रतिमा प्राप्त हुई, निश्चय ही ये जैन मंदिर था। प्रतिमाजी के ऊपर दोनों और ऐरावत हाथी है जबकि श्रीवत्स, त्रिछत्र, कमल, कंधे तक लटकी जटाएँ और चिन्ह वृषभ भी प्रतिमा जी में अंकित हैं। महेशपुर से कुल 200 छोटी-बड़ी प्रतिमाएँ प्राप्त हुई हैं जिनमें तीर्थंकर प्रतिमा एक ही है, कुछ जैन देवी देवताओं की प्रतिमाएँ भी मिली हैं। यहाँ से एक 18 पंक्तियों का शिलालेख भी प्राप्त हुआ है। जहाँ ये प्रतिमाएँ मिली, उस स्थान को ग्रामीणों द्वारा निशान पखना टीला भी कहा जाता है। इसके अतिरिक्त यहाँ एक आदिनाथ टीला भी है, आदिनाथ टीला विशाल वृक्ष से आच्छादित होने के कारण अत्यधिक विनष्ट स्थिति में था। यहाँ पर उत्खनन से परवर्ती काल में संरचित जगती प्रकाश में आई है। इस स्थल से प्राप्त लगभग 10वीं सदी ईसवी के अभिलेख का भग्न टुकड़ा महत्वपूर्ण है। उत्खनन प्रमाण से यह स्पष्ट हुआ है कि इस टीले पर स्थापित आदिनाथ प्रतिमा तथा अधिष्ठान अवशेष निशान पखना टीले से लाकर यहाँ रखे गये हैं।

महेशपुर में उत्खनन से दक्षिण कोसल की ऐतिहासिक स्थापत्य कला पर विशेष प्रकाश पड़ा है। महेशपुर में 2008 एवं 2009 में संपादित उत्खनन कार्य से मुख्य रूप से भग्न मंदिरों की संरचनाएँ अस्तित्व में आई हैं। बहुत थोड़ी मात्रा में ही महेशपुर की कला संपदा को प्रकाश में लाया जा सका है तथा इसका अधिकांश भाग वन में समाया हुआ है। कई टीलों की खुदाई होनी है। यहाँ के अनेक प्राचीन टीले, आवासीय भूभाग तथा सरोवर वनांचल

में लगभग 2 कि.मी. के क्षेत्र में फैले हैं। महेशपुर की विशालता से पता चलता है कि यहाँ तीर्थयात्री आते थे और यह दंडकारण्य का प्रवेश द्वार रहा होगा।

वर्तमान स्थिति

बहुत सी प्रतिमाएँ खंडित हैं और संरक्षित की जा रही हैं, अभी आगे विशेषज्ञों द्वारा और भी खुदाई होने की सम्भावना है। महेशपुर के पास ही एक स्थान है लक्ष्मणगढ़ जहाँ भी खुदाई हुई है और कुछ शैल चित्र और छठी सदी की कुछ देवी देवताओं की प्रतिमाएँ मिली हैं और अभी खुदाई जारी है। वहाँ से भी जैन अवशेष मिलने की पूर्ण सम्भावना है।

महेशपुर गाँव के अवशेषों को करोड़ों रुपये खर्च कर उसी स्थान पर सजाया गया है, लेकिन इन टीलों के ही निकट हो रही ब्लास्टिंग के कारण से यहाँ मिले भग्नावशेषों पर अस्तित्व का संकट गहराने लगा है। आप भी यदि कभी उधर से गुजरे तो अवश्य महेशपुर का भ्रमण करें और आदि प्रभु की प्रतिमाजी के दर्शन करें। जब अधिक संख्या में जैन लोग वहाँ पहुँचेंगे तो सरकार को भी जिन प्रतिमाजी और अन्य प्रतिमाओं की उचित व्यवस्था और सुरक्षा करनी पड़ेगी और यही तो हम चाहते हैं।

- मनीष जैन, उदयपुर
+91-9461872124

सेडम जिला- गुलबर्गा कर्नाटक का १२ वीं सदी का पुरातन जैन मंदिर

यद्यपि जैन धर्म को राष्ट्रकूट शासकों ने संरक्षण प्रदान किया और उसके सिद्धांतों का पालन भी किया तथापि जैन धर्म का प्रभाव एक राज्य वंश तक सीमित नहीं रहा। जैन धर्म का प्रभाव उत्तरी पूर्वी कर्नाटक क्षेत्र में मध्यकालीन शताब्दियों में आम जन में पर्याप्त गहराई तक पैठा हुआ था। कल्याणी के चालुक्य, सिलहार और गंग शासकों ने मध्यकालीन कर्नाटक में प्राचीन जैन मंदिरों का जीर्णोद्धार, नव मंदिरों का निर्माण, जैन कवियों और लेखकों को राज्य संरक्षण और जैन मंदिरों को दान देने जैसे कार्य प्रचुरता से किये।

ऐसे ही प्राचीन जैन मंदिर जिनको कल्याण चालुक्यों और राष्ट्रकूट शासकों ने बनवाया था वे मंदिर आज भी कर्नाटक और महाराष्ट्र राज्य के बीदर, गुलबर्गा, यदगिर, बेल्लारी, उस्मानाबाद और लातूर जिलों में

विद्यमान हैं और प्राचीन जैन धर्म की गौरव गाथा का गा रहे हैं। प्राचीन जैन शिलालेखों और साहित्यिक प्रमाणों के आधार पर यह सिद्ध होता है कि गुलबर्गा का क्षेत्र 8वीं से 13वीं शताब्दी तक प्राचीन जैन धर्म का एक प्रमुख केंद्र था।

सेडम क़स्बा कर्नाटक राज्य के गुलबर्गा जिले में स्थित है। यह स्थान मलखेड (मान्यखेत) कस्बे से लगभग 15 किलोमीटर की दूरी पर तथा गुलबर्गा जिला मुख्यालय से लगभग 55 किलोमीटर की दूरी पर दक्षिणी पूर्वी दिशा में स्थित है।

यद्यपि सेडम प्राचीन मान्यखेत (मलखेड) जो कि राष्ट्रकूट राजाओं की राजधानी थी, वहाँ से अधिक दूर नहीं है परन्तु सेडम कस्बे से मिले प्राचीन राष्ट्रकूट कालीन अवशेष और स्मारक नहीं के बराबर हैं। संभवतः इस

सम्बन्ध में अधिक शोध की आवश्यकता है। अधिकतर स्मारक, अवशेष और सामग्री जो इस स्थान से प्राप्त हुई है वह कल्याणी चालुक्य कालीन है।

सेडम का प्राचीन जैन मंदिर

साहित्य और शिलालेख प्रमाणों के आधार पर सेडम में तीन जैन मंदिर थे, जहाँ दो जैन मंदिर शेट्टियार ओनी में थे और एक मंदिर वर्तमान पॉटर कॉलोनी में स्थित था।

एक जैन मंदिर तो शायद अन्य धर्म के मंदिर में परिवर्तित हो गया है वहीं अन्य एक शायद ध्वस्त हो गया है। वर्तमान में शेट्टियार ओनी में स्थित एक जैन मंदिर ही सही अवस्था में है, जो जैनों के अधिकार में है। ये जैन मंदिर लगभग 11-12 वीं शताब्दी ईस्वी से सम्बन्धित है। शेट्टियार ओनी में का आशय व्यापारियों के आवास से है, जो कि कन्नड़ भाषा का शब्दयुग्म है। प्रारम्भ में यह जैन मंदिर काफी बुरी अवस्था में था और आस-पड़ोस के लोगों द्वारा इस चालुक्य कालीन जैन मंदिर का उपयोग पशुओं को बाँधने, चारे के भंडार, उपलों को सुखाने और लगभग शौचालय की तरह किया जाता था।

इस बात को लेखक पी. बी. देसाई ने अपनी पुस्तक ***जैनिज़म इन साउथ इंडिया एंड सम जैन एपिग्राफ्स*** में भी उल्लिखित किया है।

सेडम का जैन मंदिर काफी तंग गलियों में स्थित है और चालुक्य कला का महत्वपूर्ण नमूना है। इस जैन मंदिर में मूलनायक प्रतिमा पार्श्वनाथ भगवान की है जो कि कल्याण चालुक्य कालीन प्रतिमा है। जैन मंदिर का प्रवेश द्वार किसी आम घर की तरह ही प्रतीत होता है। जैन मंदिर प्रांगण में प्रवेश करते ही अर्ध मंडप दिखाई देता है और इस अर्ध मंडप में दरवाजे के दोनों ओर प्राचीन कन्नड़ भाषा में उत्कीर्ण शिलालेख है। इस शिलालेख से चालुक्य शासन, जैन भट्टारक, आचार्यों और तत्कालीन परिस्थितियों पर प्रकाश पड़ता है। मंदिर में प्रवेश करते ही सामने गर्भगृह दिखाई देता है, जिसमे मूलनायक पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमा विराजमान है। गर्भगृह में स्थित मूलनायक प्रतिमा भगवान पार्श्वनाथ की है जो कि खड्गासन अवस्था में विराजमान है।

यह प्रतिमा लगभग 3 से 3.5 फ़ीट की ऊँचाई की होकर काले पाषाण में निर्मित है। इस मूलनायक प्रतिमा में अष्ट प्रतिहार्यों का निरूपण किया गया है। मस्तक पर तीन छत्र, सर्प फणावली और यक्ष-यक्षिणी का निरूपण इस प्रतिमा को आकर्षक बनाते हैं।

गर्भगृह के प्रवेश द्वार के सरदल में तीर्थंकर प्रतिमा का निरूपण किया गया है। इस द्वार पर यक्ष-यक्षिणी, सहायक देवी देवताओं का निरूपण किया गया है। मंदिर के अंतराल में काफी चालुक्य कालीन खम्भों का निरूपण किया गया है। मंदिर में मूलनायक प्रतिमा के अलावा एक खड्गासन तीर्थंकर प्रतिमा, चालुक्यकालीन तीर्थंकर पार्श्वनाथ की पद्मासन प्रतिमाएँ और यक्षिणी की प्रतिमाएँ दर्शनीय है। इस मंदिर में दो यक्षिणी प्रतिमाएँ भी विराजमान है जो कि सम्भवतः यक्षिणी ज्वालामालिनी और अम्बिका की हैं। यह दोनों प्रतिमाएँ त्रिभंग अवस्था में विद्यमान है। इसमें से एक यक्षी प्रतिमा द्विभुजा और एक प्रतिमा चतुर्भुजा है। यह दोनों ही प्रतिमाएँ चालुक्यकालीन है।

सेडम का इतिहास और शिलालेख

सेडम का प्राचीन नाम सेडिम्बा था और इस तथ्य की प्रमाणिकता यहाँ से प्राप्त शिलालेखों के आधार पर होती है। इस स्थान से लगभग 6 शिलालेख प्राप्त हुए है, जिन पर सर्वप्रथम प्रकाश पी. बी. देसाई द्वारा लिखित पुस्तक ***जैनिज़म इन साउथ इंडिया एंड सम जैन एपिग्राफ्स*** में डाला गया है। उनकी इस पुस्तक में इन शिलालेखों पर विस्तृत रूप से चर्चा की गयी है और तत्कालीन कला, परंपरा, पूजा-पद्धति, इतिहास और चालुक्य शासन

पर प्रकाश डाला गया है।

शेट्टियार ओनी में स्थित जैन मंदिर से प्राप्त शिलालेख से ***लोक जिनालय*** के बारे में सूचना प्राप्त होती है। यह लोक जिनालय आज अस्तित्व में नहीं है परन्तु इस बात का अनुमान है कि यह जिनालय एक व्यक्ति हय सामंत लोक के द्वारा बनवाया गया था। इस बात से एक और अनुमान लगता है यहाँ मध्य काल में काफी जैन मंदिर थे, जो आज समय के साथ अस्तित्व में नहीं है। शेट्टियार ओनी में में स्थित जैन मंदिर के पास स्थित कुएँ से कई जैन प्रतिमाएँ प्राप्त हुई थीं। शेट्टियार ओनी में स्थित जिनालय से प्राप्त एक अन्य शिलालेख में यहाँ के 300 महाजनों का उल्लेख किया है जिनके दान के फलस्वरूप शांतिनाथ जिनालय का निर्माण हुआ और उस मंदिर को ब्रह्म जिनालय के नाम से जाना जाता था। इस शिलालेख में आचार्य प्रभाचन्द्र त्रिविद्या भट्टारक का उल्लेख भी आया है जो कि वीरपुरा के पवित्र मठ के प्रमुख थे और मडुवा गण से सम्बन्धित थे। यद्यपि मडुवा गण के बारे में अधिक जानकारी नहीं है, परन्तु यह यापनीय संघ से सम्बन्धित है। यह शिलालेख चालुक्य शासक त्रिभुवनमल्ला देवा विक्रमादित्य षष्ठम् के काल का है और इस शिलालेख का दिनांक 24 जनवरी 1124 है। एक अन्य शिलालेख जो कि 1138 ईस्वी का है, पॉटर कॉलोनी स्थित चालुक्यकालीन जैन मंदिर से प्राप्त हुआ है। यह शिलालेख चालुक्य शासक भूलोकमल्लदेवा सोमेश्वर तृतीय के समकालीन है।

पॉटर कॉलोनी स्थित जैन मंदिर से एक अन्य शिलालेख ईस्वी सन् 1158 का प्राप्त हुआ है। यह शिलालेख चालुक्य शासक सोमेश्वर चतुर्थ के समकालीन हैं और शेट्टियार ओनी में स्थित जैन मंदिर के शिलालेख से नवीन है। इस शिलालेख से ज्वालामालिनी पंथ के बारे में जानकारी मिलती है। यह पंथ संभवतः मध्यकालीन कर्नाटक में प्रारम्भ हुआ और पूरे कर्नाटक और तमिलनाडु में प्रचलित हुआ। ज्वालामालिनी कल्प स्तोत्र की रचना आचार्य इन्द्रनन्दि ने मलखेड नामक स्थान पर की थी जो कि यापनीय संघ से संबंधित थे। यक्षिणी ज्वालामालिनी के सम्मुख तांत्रिक क्रियाओं का संपादन किया जाता था। संभवतः जैन धर्म में तांत्रिक क्रियाओं को इसी समय से मान्यता मिली और जल्द ही पूरे कर्नाटक में प्रचलित हो गयी। देवी सेडिम्बा जिसका उल्लेख शिलालेख में आया है और इस कस्बे का नामकरण भी जिनके नाम पर हुआ है वह और कोई नहीं वरन यक्षी ज्वालामालिनी हैं जिनके कानों में स्वर्ण कुण्डल हैं।

वर्तमान स्थिति और हमारा दायित्व

सेडम में 2 या 3 जैन परिवार रहते हैं जो इस मंदिर की देखभाल और पूजा इत्यादि करते हैं, कुछ वर्षों पूर्व इस जैन मंदिर का जीर्णोद्धार भी हुआ है और भी कार्य हो रहे हैं। इसी प्रकार पूरे गुलबर्गा क्षेत्र की प्राचीन जैन धरोहर का प्रचार-प्रसार संरक्षण और विकास होना चाहिए। आसपास के तीर्थों में पोस्टर आदि लगाने चाहिए। इस दिशा में दिगंबर जैन तीर्थ संरक्षिणी महासभा ने कुछ स्वयं-सेवियों के साथ मिलकर पहल भी की है, कार्य हुए भी हैं, हो रहे हैं किन्तु और अधिक तीव्र गति से तथा वृहद पैमाने पर कार्य हो इसकी नितांत आवश्यकता है।

हम सभी को सहयोग करना चाहिए, गुलबर्गा के ऐसे ही कई क्षेत्रों के विकास के लिए तभी जिले के लगभग हर ग्राम में स्थित जैन धरोहर बच पाएगी। गुलबर्गा जिले के जैन स्थलों के तथा सेडम के इस प्राचीन जैन मंदिर का दर्शन अवश्य करें। जब भी आप आसपास से गुजरें और स्थानीय गुलबर्गा के लोगों को तो सप्ताह में या महीने में या कभी-कभी जाते रहना चाहिए।

मनीष जैन उदयपुर +91-9461872124

तीर्थक्षेत्र कमेटी द्वारा आयोजित अखिल भारतीय निबंध प्रतियोगिता में तृतीय स्थान प्राप्त निबंध

वर्तमान समय में तीर्थक्षेत्रों की उपयोगिता क्या है

विजेता: गुंजन आमोद चँवरे, वाशिम

रोज की तरह सो कर उठी। आज न टीवी की आवाज थी, न बर्तनों की खटर-पटर, न मोबाइल की घंटी थी, न ही घड़ी का अलार्म, न ही दंगे-फसाद के समाचारों से रंगा हुआ न्यूज़ पेपर!

आज तो आँखें खुली थीं तो केवल मंदिर की घंटी की मंगल ध्वनि से। वह मुक्तागिरि जी तीर्थक्षेत्र का शांत परिसर और वह मंगल घंटानाद की ध्वनि ने मन में चलने वाले असंख्य विचार तथा चिंता, तनाव, उदासी, राग-द्वेष आदि समस्त नकारात्मक विचारों को एक क्षणमात्र में मन से बाहर कर दिया!

दूर पहाड़ों से आती हुई ठंडी हवा, झरने की कलरव, दूर से आती हुई महामंत्र णमोकार-मंत्र की परम मंगलमय ध्वनि लहरों से वह सुबह पावन हो गई। ऐसा सुमधुर वातावरण मन पर जादू कर गया।

वास्तव में तीर्थक्षेत्र हमारी बहुत पुरानी सामाजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक धरोहर है, हम जैनों की अनमोल पूँजी है। तीर्थंकर, अरिहंत, मुनि, शलाकापुरुष कैसे मोक्ष गए? उनका जीवन कैसा था? जीवन की सार्थकता कैसी होती है? इन सब बातों का दिग्दर्शन तीर्थक्षेत्र कराते हैं इसलिए वह हमारी धार्मिक धरोहर हैं और सांस्कृतिक धरोहर इसलिए हैं कि बहुत प्राचीन काल में हमारे पूर्वजों ने कुशल कारीगरों द्वारा हर तीर्थक्षेत्र पर उत्तमोत्तम सुंदर कलाकारी से युक्त मंदिरों का निर्माण करवाया है। शिल्प कला से सजे हुए यह मंदिर पूरे विश्व के लोगों को अपनी और आकर्षित करते हैं। तीर्थक्षेत्र आज धर्म की प्रभावना में अहं भूमिका निभा रहे हैं। तीर्थक्षेत्रों पर अंकित लेख जैन धर्म की प्राचीनता का उदघोष करते हैं। जैन धर्म के गरिमामयी प्राचीनता को दर्शाता है।

और पूरा समाज क्षेत्र पर एकत्रित होता है इसलिए यह तीर्थक्षेत्र हमारी सामाजिक धरोहर हैं। तीर्थक्षेत्रों के माध्यम से समूचे विश्व में जैन धर्म अपनी विशिष्ट पहचान है। तीर्थक्षेत्रों का हमारे जीवन में अनूठा स्थान है। तीर्थक्षेत्र का पवित्रता से भरा वातावरण शरीर की नकारात्मक ऊर्जा को एक क्षण मात्र में सकारात्मक ऊर्जा से भर देता है।

अपनी रोजमर्रा की जिंदगी में १ किलोमीटर न चल सकने वाले अथवा १५-२० सीढ़ियाँ भी न चढ़ सकने वाले हम तीर्थक्षेत्र पर इतनी सारी सीढ़ियाँ आसानी से चढ़ जाते हैं। क्या यह जादू नहीं है!!! यहाँ पर हमारे मन की श्रद्धा-भक्ति काम कर जाती है और उस क्षेत्र की महिमा जो शब्दों में बखानी नहीं जा सकती।

तीर्थक्षेत्रों पर जाने का भाव जब से मन में आता है तभी से हमारी कषाय मंद हो जाती है। माँ की गोद में बच्चे को जिस सुकून की प्राप्ति होती है बस ! वहीं सुकून धर्मप्रेमी व्यक्ति तीर्थक्षेत्रों पर भगवान के चरणों में प्राप्त करता है। बाकी सब सांसारिक विचार, राग-द्वेष, कषाय भाव मन से दूर हो जाते हैं। मन तो इन विचारों से भर जाता है कि चढ़ाने के लिए क्या द्रव्य लेकर जानी है, वहाँ कौन सा स्वाध्याय करना है, कौन सी धार्मिक पुस्तकें साथ लेकर जाना है।

जो भजन बोलने हैं, भगवान की स्तुति में गाये जाने वाले भजन अनायास ही हमारे मुख से प्रस्फुटित हो जाते हैं । मानो तीर्थक्षेत्र जाने का ठान लेने मात्र से ही हमारा जीवन धर्ममय हो जाता है।

जैसे-जैसे प्रस्थान का दिन निकट आता जाता है वैसे-वैसे हम मन से वहाँ पहुँच भी जाते हैं। हमेशा संसार के भँवर में फँसा रहने वाला हमारा मन तीर्थक्षेत्र पहुँचते ही स्वतः ही भगवान के चरणों में नतमस्तक हो जाता है।

बारिश की पहली बूंदों से धरती माँ तृप्त हो जाती है और अपनी सुगंध से पूरी सृष्टि को सराबोर कर जाती है। बस! उसी तरह पंच परमेष्ठी भगवान की शरण में जाने के उस मंगलमय विचार मात्र से हमारी दिनचर्या भक्ति की खुशबू से महक उठती है।

पहले हमारा समाज गाँवों में सीमित था, हर गाँव में मंदिर थे। दिगंबर मुनि-आर्यिका माताओं का आगमन होता था। मंदिरों में स्वाध्याय होता था, पाठशालाएँ चलती रहती थीं। बच्चे उसी धर्म की छाँव में बड़े होते थे। घर के बुजुर्ग दादा-दादी, नाना-नानी तो मानो चलते-फिरते विश्वविद्यालय की भूमिका निभाते थे। उनकी धार्मिकता से भरी दिनचर्या के माध्यम से, उनके द्वारा सुनाई जाने वाली प्रथमानुयोग की कहानियों से, धार्मिक सात्विक आचरण से बच्चों का जीवन अपने आप धार्मिक संस्कारों की छाँव में आकार लिया करता था।

लेकिन आज हमारा समाज कुछ अधिक पाने की लालसा और भौतिकता की चकाचौंध में शहरों में जा बसा है । बच्चों को दादा-दादी से संस्कार और उनका प्यार मिलना कम हो गया। मंदिर जी का रास्ता दूर हो गया। स्कूल, कॉलेज, कोचिंग क्लासेस के चक्कर में देव-दर्शन, पाठशाला, महाराजजी के दर्शन मानो जीवन से ओझल से हो गए हैं। टीवी, मोबाइल के चक्कर में हम धर्म से दूर होते जा रहे हैं।

ऐसे विपरीत समय में बच्चों को तीर्थ यात्रा पर ले जाना, उनके जीवन में अपने आप धर्म के प्रति जागरुकता, स्वाध्याय और शुद्ध आचरण के प्रति लगाव का निर्माण करता है।

तीर्थक्षेत्रों पर चित्रों के माध्यम से अंकित कहानियाँ, गुफाओं में चित्रण के माध्यम से दर्शाये गए प्रसंग, क्षेत्र पर हुए चमत्कार, घटी हुई अतिशयकारी घटनाएँ, पुरातन अभिलेख, प्रतिमाओं की सुंदरता, इन सब के

माध्यम से हर क्षेत्र की, हर मंदिरजी की अपनी एक कहानी बच्चों के सामने आती है। अपना धर्म कितना पुरातन है, अपने धर्म की क्या विशेषताएँ हैं, हमारा धर्म बाकी सारे धर्मों से अलग क्यों हैं, यह सारी बातें उनके सामने खुल जाती है।

तीर्थक्षेत्रों पर किए गए प्रातः के दर्शन, अभिषेक-पूजन से उनका जीवन सफल हो जाता है। पुण्य की प्राप्ति होती है।

तीर्थक्षेत्रों के माध्यम से उनके जीवन में जगी यह धर्म की ज्योत मानो उनका तन-मन-जीवन प्रकाशमान कर देती है।

अगर क्षेत्र पर महाराज जी विराजमान हों तो सोने पर सुहागा हो जाता है, महाराज जी के प्रवचन, सामायिक-प्रतिक्रमण, आचार्यभक्ति, शंका समाधान, उनका मंगलमय उपदेश नई पीढ़ी को सही दिशा दिखाने के लिए मानो दीप स्तंभ सा कार्य करता है। तीर्थ क्षेत्र के उस शांत, पवित्र वातावरण में मन के भाव भी शांत निराकुल हो जाते हैं। आत्म कल्याण का मार्ग प्रशस्त होने लगता है।

कॉलेज में पढ़नेवाले, शहरों में अकेले रहने वाले विद्यार्थियों की भागम-भाग की जिंदगी एकाकी होने लगी है।

तीर्थ यात्रा के बहाने माँ-बाप अपने बच्चों को अपना अच्छा समय दे सकते हैं तथा यात्रा खत्म होने तक सभी साधर्मी, धर्मानुरागी, संयमपूर्वक रहते हैं व तामसिक, अभक्ष्य आहार से अपने आप ही दूर रहते हैं। ब्रह्मचर्य का पालन सहजतापूर्वक जीवन को पवित्र बना देता है।

संयम का जीवन में होना यह मनुष्य पर्याय की सबसे बड़ी उपलब्धि है, जिस संयम के लिए स्वर्ग के देव भी तड़पते हैं, उस संयम का हम सब रोजमर्रा की जिंदगी में तो पूरी तरह पालन नहीं कर सकते लेकिन यात्रा के दौरान हम बड़े ही संयम पूर्वक नियम लेते हुए अपना जीवन संवार सकते हैं, उसी संयम के प्रकाश में हमें मोक्ष पद अधिक प्रशस्त दिखाई देता है।

अहा!!! तीर्थक्षेत्रों के माध्यम से हमारे जीवन में दिव्यानंद की अनुभूति का संचार हो जाता है। पिछले जन्म के कुछ अनुपम पुण्य के उदय से मनुष्यभव की प्राप्ति होती है और मनुष्यभव की सार्थकता ही तीर्थ यात्रा के माध्यम से तीर्थंकर भगवान की प्रतिमा का दर्शन करके उन जैसा बनने की चाह अपने दिल में जगाने में ही है।

आज सभी लोग देश-परदेश घूमने जाते हैं, भ्रमण की पूरी तैयारी करते हैं और पहले से योजना बनाते हैं ताकि यात्रा के दौरान कोई कठिनाई न हो।

आज हमारे तीर्थक्षेत्रों का स्वरूप भी वर्तमान पीढ़ी की आवश्यकताओं के अनुरूप होना चाहिए। हर क्षेत्र की परिपूर्ण वेबसाइट तैयार होनी चाहिए। क्षेत्र की पूरी जानकारी-इतिहास-महत्व, वहाँ जाने के रास्ते, ट्रेन-बस-हवाई मार्ग से कैसे पहुँचें, इसकी पूरी जानकारी दी जाए एवं वहाँ की बुकिंग आदि बिना किसी दिक्कत के घर पर बैठ कर इंटरनेट के माध्यम से करने की सुविधा हर क्षेत्र पर मिलनी चाहिए क्योंकि यह आज के समय की माँग है।

आज तीर्थक्षेत्रों का स्वरूप बदल रहा है वहाँ की धर्मशालाएँ बदल रही हैं, उनमें आधुनिक सुविधाएँ बढ़ाई जा रही हैं, कमरों में टीवी व एसी लगाए जा रहे हैं, होटलों की तरह सूईट बनाए जा रहे हैं, यह आधुनिकता बढ़ती दिखाई देती है और यह सुविधाएँ समाज की युवा पीढ़ी की माँग के आधार पर आरंभ की जा रही हैं पर इसमें एक संतुलन रखा जाना चाहिए अन्यथा तीर्थक्षेत्रों व पर्यटन स्थलों में अंतर ही क्या रहेगा, भौतिकता की अंधी नकल में कहीं हम अपने क्षेत्रों की सादगी, धार्मिकता को ही समाप्त न कर दें। तीर्थक्षेत्रों पर स्वच्छता व साफ-सफाई, वृक्षारोपण, हरियाली भरपूर होनी चाहिए, उद्यानों-बाग-बगीचों का निर्माण किया जाए, मांस मदिरा और अभक्ष्य पदार्थों की बिक्री व सेवन पर पूर्ण प्रतिबंध होना चाहिए।

कल समाज की युवा पीढ़ी को तीर्थक्षेत्रों की पुरातन, पावन और अनमोल धरोहर को संभालना है और समाज का नवयुवक आज बाकी क्षेत्र की चकाचौंध को देखकर उस ओर आकर्षित होता जा रहा है और अपनी जिंदगी भी जगमगाहट भरी दुनिया में जीता है। ऐसी परिस्थितियों में अगर तीर्थक्षेत्र कमेटी अपने सभी क्षेत्रों पर संतुलित बदलाव लाती है, उत्तम सुविधाएँ देती है तो निश्चय ही युवा पीढ़ी के पाँव बार-बार तीर्थक्षेत्रों की ओर बढ़ते हुए दिखाई देंगे।

क्योंकि नैसर्गिक सौंदर्य से भरे हमारे तीर्थक्षेत्र अपने आप में एक अद्भुत सुंदरता धारण किए हुए हैं, सभी की आकुलता भरी जिंदगी में निराकुलता लाने में अहं भूमिका निभाते हैं, ये क्षेत्र सदा ही हम सब के लिए वंदनीय और पूजनीय हैं।

हमारे हर तीर्थक्षेत्र का अपना महत्व है। इन तीर्थों की सबसे बड़ी भूमिका तो यह है कि ये अरिहंत-सिद्ध के स्वरूप को दर्शाते हैं। उनकी वीतराग दशा अरिहंत परमात्मा की प्रतिमा के चेहरे के शांत भाव, स्थिर और शुद्धात्मा में लीन, सहज शांत मुद्रा, उनका परिग्रह से रहित नग्न दिगंबर स्वरूप, अजर-अमर-निरंजन निराकार स्वरूप हमारे मन में एक अविरल शांति का प्रवाह करते हैं। तीर्थक्षेत्र हमारे खुद के पर्याय रहित सच्चे, शुद्ध स्वरूप का दिग्दर्शन करवाते हैं। जिन स्वरूप में निजस्वरूप का यह दर्शन हमारा मनुष्यभव सार्थक करता है।

आज के इस चकाचौंध के युग में तीर्थक्षेत्रों का महात्म्य बड़ा ही अतुलनीय है। माता-पिता भले ही अपने बच्चों में संस्कारों का बीजारोपण कर दें पर उन संस्कारों के बीज को एक मजबूत विशाल वटवृक्ष बनाने का काम तो हमारे मंगलमय तीर्थक्षेत्र ही करते हैं।

अपने वीतराग प्रभु को निकटता से जानने के लिए और प्रभु के माध्यम से अपने आप को खोजने में तीर्थक्षेत्रों की महिमा अपरंपार है।

भगवान के चरणों के प्रति अत्यंत राग होता है तब सम्यग्दर्शन होता है

- मुनि पुंगव श्री सुधासागर जी महाराज

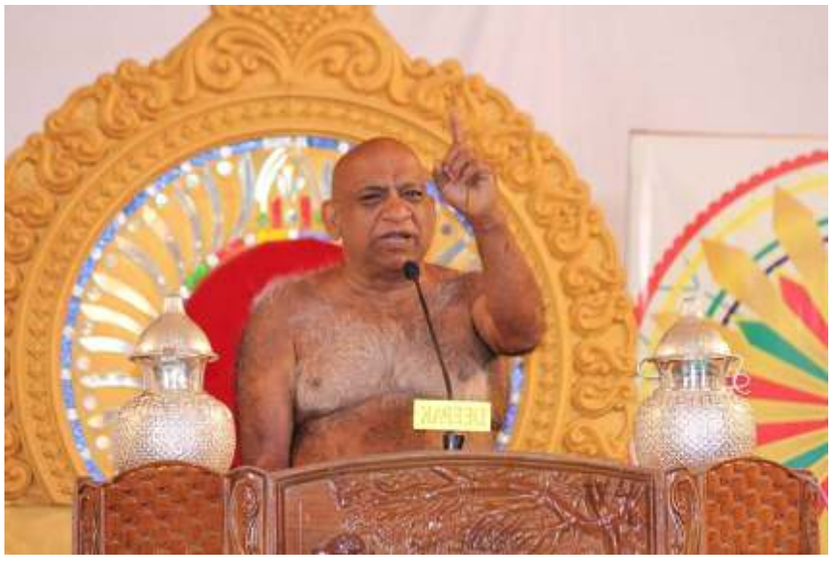

आप लोगों को माता पिता का महत्व समझना चाहिए। स्वर्गों में माता पिता नहीं होते, तीर्थंकर को मोक्ष जाने के लिए माता-पिता को स्वीकार करना पड़ा, जन्म तो माता की कोख से ही होता हैं, नौ माह तक तो माँ की कुक्षी से ही कमल खिलेगा उसी से शरीर बनता है तीर्थंकर बालक का।

तीर्थंकर को माता की गोद- पराधीनता देखो भगवान को जन्म लेने के लिए मां की कोख में आना पड़ा। प्रकृति कहती है कि इस संसार में संस्कार विहीन होकर कोई मोक्ष नहीं जा सकता, सर्वार्थसिद्धि से सिद्ध शिला मात्र बारह योजन दूर थी, फिर भी तीर्थंकर बालक को इतनी बड़ी परिक्रमा लगाकर माता की गोद में क्यों आना पड़ा?

आपने लॉकर में क्या सामान रखा है इससे मैनेजर से कोई सरोकार नहीं होता है लेकिन जब निकालने जाओगे तो मैनेजर की चाबी के बगैर कुछ भी नहीं निकाल सकते। ये सृष्टि का नियम है कि निमित्त रुपी मैनेजर के बिना सम्यगदर्शन नहीं हो सकता, गुरु रूपी मैनेजर से पहले सम्यग्दर्शन की जरूरत पड़ेगी, मोक्ष जाने के लिये पहले सम्यकदर्शन की जरूरत पड़ेगी, जब तक मोक्ष जाने वाले केवली के चरणों की चाबी नहीं लगेगी, तब तक मोक्ष नहीं हो सकता। जब भगवान के चरणों के प्रति अत्यंत राग उमड़ता है, तब सम्यग्दर्शन होता है।

निमित्त शक्ति- जहाँ हम लोग कहते हैं कि एक द्रव्य दूसरे द्रव्य का कुछ नहीं करता तो फिर क्यों कहते हैं कि अंतिम सम्यकदर्शन केवली भगवान के चरणों के अधीन है, इतनी बड़ी शक्ति होने के बाद भी वे निमित्त के अधीन हो रहे हैं। निर्यापक श्रमण मुनिपुंगवश्री सुधासागर जी महाराज ने प्रवचन में कहा कि उपादान की कीमत समझे बगैर निमित्त के कुछ नहीं होता है। वह वस्तु को तो नष्ट नहीं कर सकता लेकिन अर्थ क्रिया नहीं हो सकती। निमित्त विद्रूप हो जाये तो अर्थ क्रिया बदल जायेगी, गुरू के बिना तुम्हारी अर्थ क्रिया नहीं हो पायेगी।

तीर्थंकर की तरह हम अपने बेटों को जन्म देने में सावधानी रखें- मुनि पुगंव सुधासागरजी महाराज ने कहा कि सौधर्म इन्द्र सन्देश भेजकर तीर्थंकर बालक की सावधानीपूर्वक सेवा के लिए अष्ट कुमारियों को लगा देता है। तीर्थंकर के प्रति इतनी सावधानी तो आपके यहाँ आया हुआ बेटा तो शुद्ध लोहा है और ये संसार शुद्ध कीचड़ इसलिए आपको तो इतनी सावधानी रखनी होगी वरना लोहे को तुरंत जंग लगती है।

हर बालक जन्म के समय पाप क्रिया ही करता है कि दस दिनों को घर अपावन हो जाता है सूतक लग जाता है जिस माँ ने जन्म दिया उसे पैंतालीस दिनों के लिए देव शास्त्र गुरु से अलग कर दिया जाता है लेकिन तीर्थंकर बालक के परिवार को सूतक नहीं लगता।

मोक्ष कल्याणक दिवस मनाया- बिजौलियाँ में ११ फरवरी से आयोजित होने वाले पंचकल्याणक महोत्सव के पूर्व भगवान आदिनाथ निर्वाण कल्याणक महोत्सव के दिन दोपहर में माता मरूदेवी की गोद भराई की क्रिया की गई, साथ ही सभी मुख्य पात्रों का सम्मान किया गया। माता मरूदेवी की सर्व प्रथम गोद महायज्ञ नायक श्री सुनील जैन ने इसके बाद तीर्थ वंदना के सह सम्पादक श्री विजय जैन धुर्रा परिवार व समाज जनों ने गोद भराई कर प्रभावना वितरित की। इसके पूर्व धर्म सभा को संबोधित करते हुए मुनि पुगंव श्री सुधासागरजी महाराज ने कहा कि युग के आदि में भगवान ऋषभदेव को आज के दिन ही महानिर्वाण की प्राप्त हुई थी इसलिए आज का दिन निर्वाण कल्याणक महोत्सव के रूप में मनाया जा रहा है। आदिनाथ भगवान ने द्रव्य को नहीं प्राप्त किया, आज मोक्ष तत्व को प्राप्त किया।

लोकसभा अध्यक्ष ने निर्यापक श्रमण मुनि पुंगव श्री 108 सुधासागर जी महाराज का आशीर्वाद प्राप्त किया

भीलवाड़ा(राजस्थान) के प्रवास के दौरान लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने बिजोलियाँ स्थित दिगंबर जैन पार्श्वनाथ "तपोदय" तीर्थ क्षेत्र में आयोजित पंचकल्याणक महोत्सव में पधारकर निर्यापक श्रमण मुनि पुंगव श्री 108 सुधासागर जी महाराज का आशीर्वाद प्राप्त किया।

तीर्थंकर ऋषभदेव स्वामी दीक्षा व केवलज्ञान भूमि तपस्थली प्रयाग तीर्थ पर महामस्तकाभिषेक

भगवान ऋषभदेव की दीक्षा व केवलज्ञान भूमि महाकुंभ नगरी प्रयाग इलाहाबाद में वर्ष 2001 में पूज्य गणिनीप्रमुख दिव्य ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से निर्मित तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली प्रयाग तीर्थ के 20 वर्ष पूर्ण होने पर भारतगौरव प्रभावना प्रभाकर अन्तर्मना आचार्य प्रसन्न सागर जी महाराज, संघत मुनि सौम्य मूर्ति पीयूष सागर जी व ऐलक श्री पर्व सागर जी महाराज के प्रमुख सानिध्य में, तीर्थ पर विराजमान आचार्य श्री विपुल सागर जी महाराज ससंघ आचार्य भद्रभाहु सागर जी व मुनि भरतेश सागर जी महाराज की की पावन उपस्थिति में, भगवान ऋषभदेव का द्विदशाब्दी महामस्तकाभिषेक महोउत्सव धूमधाम से मनाया जाएगा। जहाँ गुरुवार दि.18 फरवरी 2021 माघ.शु सप्तमी प्रातः 9 बजे से आर्यिका रत्न चन्दनामति माताजी के मार्ग दर्शन व व्रताधिकारी पीठाधीश स्वस्ति श्री रविन्द्र कीर्ति स्वामी जी की अध्यक्षता में महोउत्सव की क्रियाविधि संम्पन करवाई जाएगी। ब अन्तर्मना आचार्य श्री प्रसन्न सागर महाराज कानपुर से अपने मंगल विहार करते हुए काशिपुर, फतेपुर होते हुए अपनी अंहिसा संस्कार यात्रा के माध्यम से हकरीब 14 से 15 फरवरी के बीच तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली प्रयाग तीर्थ इलाहाबाद प्रयाग पहुँचेगे। जहाँ गुरुदेव के सानिध्य में भक्तो द्वारा भगवान ऋषभदेव स्वामी की भक्तिभाव से आराधना की जाएगी।

धरसेन सागरजी मुनिमहाराज द्वारा गिरनार तीर्थ की 1008 वंदना सम्पन्न

गिरनार। प्रशान्तमूर्ति आचार्य शांतिसागरजी महाराज (छाणी) परम्परा के चतुर्थ पट्टाचार्य गिरनार गौरव जैनाचार्य श्री निर्मलसागर जी महाराज के आज्ञानुवर्ती सुयोग्य शिष्य महातपस्वी मुनिश्री धरसेन सागरजी महाराज ने अपने मुनि दीक्षा के साढ़े चार वर्ष के अल्प समय में तीर्थक्षेत्र गिरनार सिद्धक्षेत्र पर्वत की सेसावन सहित पाँचों टोंकों की 5 फरवरी 2021 को 1008 वन्दनाएँ पूर्ण की।

इन्होंने अपने दीक्षागुरु गिरनार गौरव आचार्यश्री 108 निर्मलसागरजी महाराज से गिरनार वंदना का जो संकल्प लिया था वह 5 फरवरी 2021 की वंदना के साथ पूरा हुआ। जिनशासन में शायद ये प्रथम अवसर है जब 69 वर्ष के एक दिगम्बर मुनिराज ने इतने अल्प समय में प्रतिदिन करीब 21 हजार सीढ़ियाँ चढ़-उतर कर 1008 वन्दना पूर्ण करके इतिहास रच दिया। ये चतुर्दिक संघ एवं सम्पूर्ण दिगम्बर जैन समाज के लिए गौरव की बात है।

निर्मलध्यान केन्द्र के अधिष्ठाता ब्रह्मचारी सुमत भैया ने विद्वत् परिषद् के राष्ट्रीय महामंत्री डा. महेन्द्रकुमार जैन 'मनुज' को बताया कि आज ज्यों ही मुनिश्री अपनी 1008 वीं वंदना करके पर्वत से नीचे आ रहे थे तब क्षेत्र पर विराजमान मुनि श्री नयनसागरजी, मुनि श्री विश्वविजयसागर जी महाराज की अगुवाई में नगरजन व संस्थाओं के पदाधिकारी जन एकत्रित होकर पहाड़ के नीचे से गाजे-बाजे, शोभा यात्रा के साथ प्रवास स्थल निर्मलध्यान केन्द्र समवशरण तक लाये।

मुनि श्री धरसेनसागर जी की मुनिदीक्षा 9 जुलाई 2016 को गिरनार तीर्थक्षेत्र पर नेमिनाथ मोक्षकल्याणक लड्डू महोत्सव के पावन अवसर पर गिरनार

गौरव आचार्य श्री 108 निर्मलसागरजी महाराज के कर कमलों द्वारा हुई थी। दीक्षा लेने के बाद गुरु आज्ञा से आपने गिरनार क्षेत्र की यात्रा प्रारम्भ करने का संकल्प किया। तदनुसार 1 जनवरी 2017 से गिरनार यात्रा प्रारम्भ की। प्रातः ठीक 4:30 बजे गिरनार पर्वत यात्रा प्रारम्भ करते हैं पाँचों टोंकों के दर्शन कर सहसा-वन स्थित चरणों के दर्शन कर करीब ९:00 बजे तक समवशरण मंदिर तलैटी में नीचे पहुँच जाते हैं। करीब 4 या 5 घंटे में यात्रा पूर्ण कर लेते हैं। प्रतिदिन मुनिश्री अपने गुरु आचार्य को नमोस्तु करते, शुद्धि का आहार लेते फिर आत्म ज्ञान- स्वाध्याय, सामायिक में लीन हो जाते हैं, सदैव प्रसन्न मुद्रा में रहते हैं। प्रतिदिन करीब 21000 सीढ़िया चढ़ने उतरने में कोई रुकावट नहीं आई। पहाड़ पर रहने वाले सभी साधु संत, डोलीवाले तथा निवासी लोग मुनिश्री को अच्छी तरह से जानते हैं।

जैन मंदिरों मैं चोरी-लूट पर अंकुश की मांग

पुलिस महानिदेशक से मिले जैन समाज के प्रतिष्ठित लोग, डीजीपी ने एसआईटी गठित करने के आदेश दिए

जैन मंदिरों में चोरी और लूट की घटनाओं से क्षुब्ध समाज के प्रतिष्ठित लोग भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी मुम्बई के कार्याध्यक्ष एवं महामंत्री श्री राजेन्द्र के. गोधा के नेतृत्व में सोमवार को पुलिस महानिदेशक राजस्थान एम.एल लाठर से मिले। समाज बंधुओं ने पुलिस महानिदेशक से जैन मंदिरों में हो रही चोरी और लूट की घटनाओं पर अंकुश लगाने और त्वरित न्याय के लिए एसआईटी गठित करने का एक ज्ञापन सौंपा। पुलिस महानिदेशक ने मामले की गंभीरता को देखते हुए एसआईटी गठित करने का आदेश देते हुए जैन समाज को त्वरित न्याय के लिए आश्वस्त किया।

गौरतलब है कि पिछले एक सप्ताह में जयपुर के ट्रांसपोर्ट नगर इलाके स्थित पुराना घाट और बजाज नगर इलाके की पॉश कॉलोनी महावीर नगर में जैन मंदिरों पर चोर और लुटेरों ने धावा बोला। चोरों ने वहां भगवान की बेशकीमती प्राचीन मूर्तियां और सिंहासन के साथ दानपेटियों को भी को निशाना बनाया। इसी तरह जनवरी माह में ही बूंदी के इन्द्रगढ़ माताजी रोड स्थित जैन मंदिर में भी आधा दर्जन बदमाशों ने लूटपाट की। जयपुर की वारदात में भी लुटेरों ने चौकीदार और सेवादारों को बंधक बनाकर चोरी को अंजाम दिया। प्रदेश के जैन मंदिरों में बढ़ रही चोरी-लूट की वारदातों से क्षुब्ध होकर समाज के प्रतिष्ठित लोगों ने सोमवार को पुलिस महानिदेशक एमएल लाठर से मुलाकात की।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी मुम्बई के कार्यध्यक्ष एवं महामंत्री श्री राजेन्द्र के. गोधा के नेतृत्व में पूर्व आईपीएस एस के जैन(अध्यक्ष महावीर इंटरनेशनल दिल्ली), हाईकोर्ट के वरिष्ठ अधिवक्ता श्री सुधांशु कासलीवाल(अध्यक्ष दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्रीमहावीर जी), श्री सुरेन्द्र

का जैन (राष्ट्रीय महामंत्री, दिगम्बर महासमिति) और हाईकोर्ट के अधिवक्ता और कांग्रेस के युवा नेता रूपिन काला ने डीजीपी 'एमएल लाठर को एक ज्ञापन सौंपा। जैन मंदिरों में हो रही चोरी, डकैती और लूट की सनसनीखेज वारदातों के आरोपियों को जल्द पकड़ने और ऐसी वारदातों पर अंकुश लगाने के साथ ही एक स्पेशल इन्वेस्टिगेशन टीम का गठन करने के लिए ज्ञापन सौंपा गया। पुलिस महानिदेशक एमएल लाठर ने प्रकरण की गंभीरता और धार्मिक भावनाओं को ध्यान में रखते हुए तुरंत एसआईटी गठित करने के लिए आदेशित किया है। ज्ञापन में बताया गया कि प्रदेश के समस्त पुलिस थानों को तत्काल निर्देश दिए जाएं कि अपने-अपने इलाके स्थित जैन मंदिरों की सुरक्षा की चाक-चौबंद व्यवस्था करें। जैन समाज ने डीजीपी से मुलाकात के दौरान मांग रखी कि सभी जैन मंदिरों के आसपास रात्रिकालीन गश्त को पुख्ता कराएं, ताकि अहिंसा के मार्ग पर चलने वाला समाज भयमुक्त होकर रह सके।

सागर के केंद्रीय कारागार में अनोखा आयोजन

बंदियों के कल्याण हेतु जेल में की गयी ऋद्धिधारी मुनियों की महा आराधना

भारतवर्ष के इतिहास में पहली बार बंदीग्रह में प्रभुवंदना का यह महोत्सव करुणा के अवतार पूज्यपाद गुरु आचार्यश्री विद्यासागर जी महाराज के परम आशीर्वाद से संपन्न हो रहा है। ब्र. अरुण भैया, ब्र. संजीव भैया कटंगी के नेतृत्व में श्री सिद्धचक्र विधान की विधिवत क्रियाएँ संपन्न हुईं और प्रथम दिवस 4 वलय के क्रम से 8,16,32 सहित चारण ऋद्धिधारी मुनियों के 64 अर्घ समर्पित किये गए।

ब्र. रेखा दीदी ने कहा कि देखो यहाँ पर एक बार यहाँ आचार्य भगवान् पधारे थे और आज उनके आशीर्वाद से श्री भगवानजी भी आ गए हैं। तो यह भी निकट भव में संभव होगा की गुरु जी भी श्रीजी के स्थान यानि सिद्ध शिला में पहुंचेंगे। जिस स्थान पर स्वयं गुरदेव पधार चुके हो वहां निश्चित ही नूतन उर्जा का संचार होता है और हृदय परिवर्तन की भावना जागृत होती है आज प्रातः कालीन बेला में ऐसा ही दृश्य सामने आया जब कुछ बंदीजन को भी अभिषेक करने के सातिशय पुण्य का अवसर प्राप्त हुआ तो जलधारा करते करते उन कैदियों की आँखों से अश्रुधारा उमड़ पड़ी ऐसा लगा मानो सबरी को राम और सुदामा को श्याम मिल गए हो।

युवाओं में लोकप्रिय, मृदुभाषी विद्वान ब्र. संजीव भैया ने कहा कि गुरुदेव आचार्यश्री विद्यासागर जी महाराज ने बताया है कि पहला शराब त्याग, दूसरा मांस त्याग, तीसरा अपने विरोधी के प्रति विरोध की भावना का त्याग करो। यदि बंदीजन ये 3 नियम का पालन कर लें तो निश्चित ही वो अपना उद्धार कर सकेंगे और हमारा देश भी अपराध मुक्त होने की ओर बढ़ेगा और यह विधान सार्थक हो जाएगा।

2022 में होगा श्री महावीर जी में मस्तकाभिषेक

मिलेगा परम पूज्य पंचम पट्टाधीश वात्सल्य वारिधि आचार्य श्री 108 वर्द्धमान सागर जी महाराज ससंघ का मंगल सान्निध्य

राजस्थान स्थित दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी दिगम्बर जैन श्रावक श्राविकाओं की आस्था का एक बड़ा केंद्र है। वर्ष 1998 में श्री महावीर जी स्थित 1008 भगवान श्री महावीर स्वामी की मूलनायक प्रतिमा का अभिषेक आचार्य 108 श्री विद्यानंद जी महाराज के मंगल सान्निध्य में आयोजित किया गया था। उस महोत्सव के पश्चात क्षेत्र की प्रबंधकारिणी कमेटी ने प्रत्येक 12 वर्षों के अंतराल पर मस्तकाभिषेक करने का निर्णय लिया था। वर्ष 1998 के पश्चात वर्ष 2010 में किन्ही अपरिहार्य कारणों से मस्तकाभिषेक की रूप रेखा नही बन पाई। दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीर जी स्थित मूलनायक 1008 भगवान श्री महावीर स्वामी की प्रतिमा का पुनः मस्तकाभिषेक वर्ष 2022 में सम्पन्न हो ऐसी निर्मल भावना वर्तमान प्रबंधकारिणी कमेटी ने बनाई है। युग तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी का इक्कीसवीं सदी का प्रथम मस्तकाभिषेक बीसवीं सदी के प्रथम दिगम्बराचार्य चारित्र चक्रवर्ती आचार्य 108 श्री शांति सागर जी महाराज की अक्षुण्ण परंपरा के पंचम पट्टाधीश जिनधर्म प्रभावक आचार्य श्री 108 वर्द्धमान सागर जी महाराज के मंगल सान्निध्य में ही सम्पन्न हो, यह निर्णय प्रबंधकारिणी कमेटी द्वारा सर्वसम्मति से पास किया गया और कमेटी के पदाधिकारियों ने कर्नाटक के बेलगाम में विराजित आचार्य संघ को इस हेतु श्री फल भेंट कर निवेदन करने के लिए जाने का निर्णय लिया। एक तरफ सुदूर दक्षिण स्थित बेलगाम और दूसरी तरफ उत्तर में स्थित श्री महावीरजी। संघ से निवेदन कर संघ की स्वीकृति प्राप्त कर संघ को राजस्थान लाना अत्यंत कठिन जान पड़ रहा था।

कमेटी ने कोलकाता के श्री राकेश सेठी, जयपुर के श्री सुरेश सबलावत और बैंगलोर के श्री अनिल सेठी को विशेष रूप से आमंत्रित किया है। कमेटी के अध्यक्ष श्रीमान सुधांशु कासलीवाल, उपाध्यक्ष श्रीमान शांति कुमार जैन(सेवानिवृत्त आईपीएस), कोषाध्यक्ष श्री विवेक काला, संयुक्त मंत्रीगण श्री सुभाष जैन एवं श्री उमराव संघी तथा श्री राकेश सेठी, श्री सुरेश सबलावत, श्री अनिल सेठी, श्री श्रीपाल गंगवाल, बंगलुरू के श्री निहाल चंद ठोलिया, तारा देवी सेठी, संगीता राजेश पंचोलिया इंदौर आदि ने सम्पूर्ण कमेटी और भारतवर्ष के दिगम्बर जैन समाज की ओर से आचार्य श्री से मस्तकाभिषेक महोत्सव में मंगल सान्निध्य प्रदान करने हेतु दिनांक 9 फरवरी को श्रीफल भेंट किया।

कोलकाता के श्री राकेश सेठी ने श्री महावीरजी कमेटी की ओर से मंच संचालन किया और अनुरोध करते हुए कहा कि हे वात्सल्य वारिधि करुणा निधान, आप श्री ने गोम्मटेश्वर भगवान श्री श्री बाहुबली स्वामी के महामस्तकाभिषेक में लगातार तीन बार मंगल सान्निध्य प्रदान कर जन जन पर वात्सल्य का सागर बरसाया है और गोम्मटेश्वर बाहुबली स्वामी की प्रतिमा और श्री महावीर जी स्थित महावीर स्वामी की प्रतिमा में कई समानताएं है। उन्होंने बताया कि बाहुबली की प्रतिमा तीर से प्रकट हुई और महावीर जी की प्रतिमा क्षीर से प्रकट हुई। दोनों ही प्रतिमाओं के अभिषेक क्षीर से ही सम्पन हुए। महावीर स्वामी की प्रतिमा टीले से निकली और बाहुबली की प्रतिमा टीले पर निकली। दोनों ही प्रतिमाओं को लगभग 1025 वर्ष हो चुके है।

बाहुबली की प्रतिमा दक्षिण से उत्तर की ओर देखते हुए दक्षिण भारत और उत्तर भारत के सम्बन्ध को स्थापित कर रही है। श्री राकेश जी ने आगे भाव विभोर होते हुए आगे कहा कि हे वर्तमान के वर्द्धमान, आप दिगम्बर जैन सम्प्रदाय के सर्वोच्च आचार्यगण में से है तथा विशाल संघ के नायक है और जन जन के आराध्य है। श्री महावीरजी जी महामस्तकाभिषेक - 2022 समारोह में मंगल सान्निध्य प्रदान करने की स्वीकृति प्रदान करें जिस से की वो आयोजन निर्विघ्न रूप से ऐतिहासिक सफलता के साथ सम्पन्न हो।

कमेटी के अध्यक्ष श्री सुधांशू कासलीवाल एवं पदाधिकारियों ने कमेटी द्वारा प्रस्तावित निवेदन पत्र पढ़ा और आचार्य श्री के श्री चरणों मे निवेदित किया।

कमेटी ने उपस्थित स्मस्त श्रावक श्राविकाओं के साथ श्रीफल भेंट किया। विवेक जी काला ने कहा की श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री

महावीर जी की समस्त कमेटी एवं सम्पूर्ण भारतवर्ष की दिगम्बर जैन समाज आप श्री के श्री चरणों मे सविनय निवेदन करती है कि श्री महावीरजी जी महामस्तकाभिषेक - 2022 समारोह में आप ससंघ अपना मंगल सान्निध्य प्रदान करने की स्वीकृति देकर हम सभी को अपनी करुणा का आशीष प्रदान करें और संघ सहित श्री क्षेत्र महावीर जी की ओर मंगल विहार करें, महावीर जी क्षेत्र कमेटी तन मन धन से आपका मंगल विहार सम्पन्न कराने को तत्पर है।

तत्पश्चात श्रीपाल जी गंगवाल, श्री डी ए पाटिल, श्री फूल चंद जी आदि ने महावीर नगर(गेवराई) में वर्ष 2021 का चातुर्मास सम्पन्न करने हेतु श्री फल भेंट किया। ज्ञातव्य है कि राजस्थान स्थित श्री क्षेत्र पदमपुरा की कमेटी के पदाधिकारी श्री सुधीर जी, श्री हेमन्त जी सोगानी, श्री राज कुमार जी कोठयारी एवं सुभाष जी पाटनी ने वर्ष 2022 के चातुर्मास हेतु हाल ही में बेलगाम में आचार्य संघ को श्रीफल भेंट कर निवेदन किया है।

श्री फल भेंट होने के पश्चात आचार्य श्री ने आशीर्वाद प्रदान करते हुए कहा कि श्री क्षेत्र महावीर जी मे ही हमारी मुनि दीक्षा सम्पन्न हुई और वर्द्धमान की भूमि होने की वजह से ही शायद गुरुदेव ने दीक्षा के समय हमारा नामकरण वर्द्धमान सागर किया। आचार्य श्री ने आगे कहा कि महावीरजी क्षेत्र के दर्शन लगभग 24 वर्ष किये थे, लगता है अब पुनः दर्शन लाभ का अवसर आने वाला है।

आचार्य श्री ने कहा बेलगाम से श्री महावीर जी की दूरी बहुत है और समय कम और मस्तकाभिषेक का कार्य भी हिमालय जैसा ऊंचा कार्य है, इसीलिए संघ को मस्तकाभिषेक में सान्निध्य प्रदान करने हेतु शीघ्र विहार करना होगा और दूरी काफी होने की वजह से वर्ष 2021 का चातुर्मास मार्ग में ही सम्पन्न करना होगा।

आचार्य श्री ने जैसे ही मस्तकाभिषेक में अपना सान्निध्य प्रदान करने की स्वीकृति प्रदान की वैसे ही भगवान महावीर स्वामी और आचार्य श्री की जयकारों से आकाश गुंजायमान हो उठा।

कमेटी ने जानकारी देते हुए बताया कि महावीरजी महामस्तकाभिषेक समारोह -2022 के साथ साथ भव्य पंचकल्याणक प्रतिष्ठा, विभिन्न राष्ट्रीय सम्मेलन आदि अन्य कार्यक्रम भी आयोजित होंगें।

जैन तीर्थ नैनागिरि मे मंदिरों के टूटे ताले

सुविख्यात जैन तीर्थ नैनागिरि के 2 मंदिरों के ताले तोड़कर छत्र ले जाने में बदमाश सफल हो गये , वहीं चार मंदिरों के ताले तोड़ने तथा मूर्ति व गुप्त भंडार में रखी नकदी राशि ले जाने में असफल रहे । पुलिस को सूचना मिलते ही थाना प्रभारी बकस्वाहा नैनागिरि चौकी प्रभारी पुलिस बल के साथ मौके पर पहुँचकर निरीक्षण किया एवं मैनेजर शिखर चंद जैन की रिपोर्ट पर अपराध क्र. 02/2 अपराध धारा 457 व 380 भादवि के तहत प्रकरण पंजीबद्ध कर व पर स्कॉड टीम ने भी मौके पर पहुँच कर विवेचना प्रारंभ कर दी है । श्री दि.जैन सिद्धक्षेत्र नैनागिरि की ट्रस्ट कमेटी के उप मंत्री राजेश रागी ने बताया कि 6 व 7 फरवरी 2021 की मध्य रात्रि में अज्ञात बदमाशों ने जैन तीर्थ नैनागिरि के पर्वत (गिरिराज) पर स्थित जैन मंदिरों के समूह में से मंदिर क्रमांक 31 व 32 के दरवाजे के ताले तोड़कर मूर्ति के ऊपर लगे धातु के स्वर्ण पालिस से निर्मित दो छत्र की चोरी कर ले जाने में सफल हो गये वहीं मंदिर क्रमांक 04, 27, 29 व 37 के दरवाजों के ताले तोड़ने तथा मंदिरों में रखी प्रतिमाएँ, छत्र व गुप्त भंडार में रखी नगदी राशि चोरी से ले जाने का असफल प्रयास किया और पर्वत के पीछे की ओर लगे दरवाजे का ताला तोड़ दिया । रविवार की सुबह जब पप्पू माली मंदिरों के ताले खोलने गया तो वहाँ ताले टूटे देखे तो सूचना मैनेजर शिखरचंदजी को दी और मैनेजर ने पुलिस व कमेटी को सूचना देकर रिपोर्ट दर्ज कराई । घटना की जानकारी मिलते ही थाना प्रभारी बकस्वाहा आशुतोष श्रोत्रीय पुलिस चौकी नैनागिर के प्रभारी व पुलिस बल के साथ मौके पर पहुँचकर निरीक्षण किया और अपराध कायम कर विवेचना प्रारंभ कर दी |

18 वर्ष बाद आचार्यश्री कुलरत्न भूषणजी महाराज ने की आचार्य विद्यासागरजी महाराज की चरण वंदना

36 दिनों में 1008 किलोमीटर का पद विहार कर नेमावर पहुंचे आचार्य कुलरल भूषणजी

दक्षिण भारत से आए श्रद्धालु ने 1008 मंगल कलश और 1008 धर्मध्वज लेकर की अगवानी

भद्रगिरि तीर्थ प्रणेता आचार्य कुलरत्न भूषणजी महाराज करीब 8 साल बाद 23 जनवरी शनिवार को सिद्धोदय सिद्धक्षेत्र नेमावर पहुंचे। उन्होंने यहां अपने श्रद्धा गुरु आचार्य विद्यासागरजी महाराज के दर्शन कर उनकी चरण वंदना की। इस अनुपम क्षण को अपनी नजरों में कैद करने के लिए दक्षिण भारत के तीन हजार से अधिक श्रद्धालु भी नेमावर पहुंचे हैं।

'शनिवार सुबह हरदा जिले के हंडिया से कुलरल' तक पद विहार शुरू कर सुबह करीब 7.30 बजे नेमावर पहुंचे। इस दौरान श्रद्धालु 1008 मंगल कलश और 1008 धर्मध्वज, लेजिम, ढोलक, मंजीरे आदि अपने साथ लेकर चल रहे थे। कुलरत्न भूषणजी ने कर्नाटक के बागलकोट जिला के गाँव हल्लीइंग्लई (भद्रगिरि तीर्थ) से 19 दिसंबर को अपना पद विहार शुरू करने से पहले प्रण लिया था कि आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज के दर्शन करने तक वे गेहूं, ज्वार, चावल आदि ग्रहण नहीं करेंगे और 1008 किमी की इस लंबी यात्रा को 36 दिनों में पूरा कर लेंगे।

एक दिन में 30-35 किमी पद यात्रा कर शनिवार को उनका यह संकल्प पूरा हुआ। 18 वर्ष पूर्व उन्होंने ऐलक अवस्था में 2002 में बंडा जिला सागर में आचार्यश्री के दर्शन किए थे। पद यात्रा में साथ चल रहे अनुयायियों ने भी आचार्यश्री के दर्शन होने तक गन्ना, बेर और अन्य फलों का त्याग रखा था। पदयात्रा के संघपति और आचार्य विद्यासागरजी के गृहस्थ अवस्था के बड़े भ्राता महावीर अष्ठगे सदलगा और चंद्रकांत भोजपाटिल गोवा ने बताया कि दक्षिण भारत के बागलकोट, बीजापुर, बेलगाम, सांगली, कोल्हापुर सहित अन्य जगहों से लगभग 40 बसों और लगभग 60 से अधिक चार पहिया वाहनों से लगभग 3 हजार श्रद्धालु इस ऐतिहासिक क्षण के साक्षी बनने के लिए नेमावर के लिए निकले थे।

बड़ी संख्या में अजैन शामिल हुए

मूलरूप से कन्नड़ भाषी होते हुए भी उनके प्रवचन हिन्दी बोलने वालों को खासा प्रभावित करते हैं। कुछ वर्ष पूर्व तीर्थ रक्षा के लिए वे हाइवे पर बैठकर 5 दिन का अनशन भी कर चुके हैं। पिछले कई वर्षों से दक्षिण भारत के उन स्थानों पर जैन धर्म की प्रभावना कर रहे हैं, जहाँ पर जैनियों की संख्या कम हैं। उनके अनुयायियों में बड़ी संख्या अजैनों की है जो उनसे प्रभावित होकर अब जैन धर्म के सिद्धांतों का पालन कर रहे हैं।

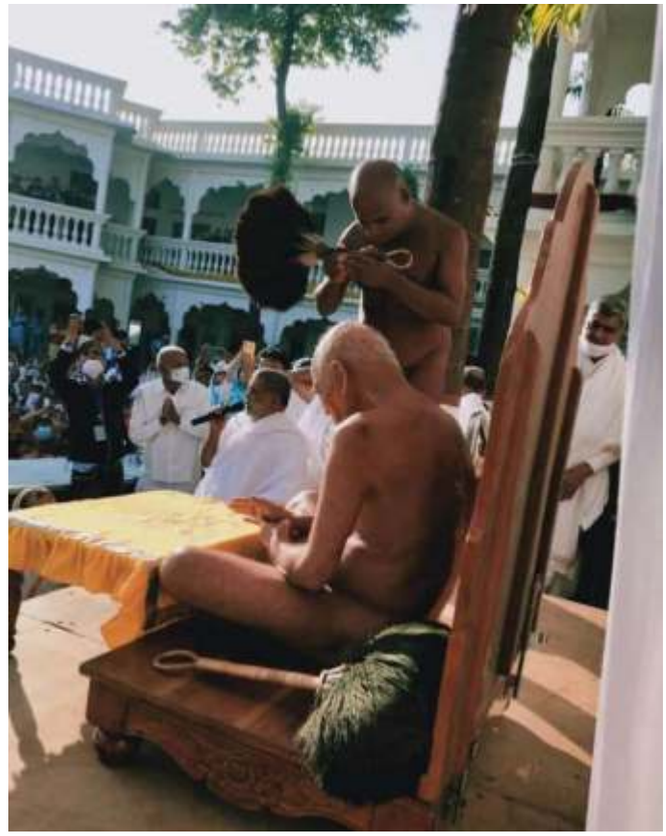

श्रद्धालुओं के लिए हरदा, नेमावर व खातेगांव में की व्यवस्था

हरदा जैन समाज के आलोक जैन और खातेगांव जैन समाज के नरेंद्र चौधरी ने बताया कि इन सभी श्रद्धालुओं के ठहरने की व्यवस्था हरदा, नेमावर और खातेगांव में की गई है। श्रद्धालुओं ने अपने साथ लाए 10 हजार श्रीफल आचार्यश्री विद्यासागरजी के चरणों में समर्पित किये। 108 पिच्छी और कमंडल, दीक्षा शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में बनाई गई आचार्य शांतिसागरजी महाराज की 108 मूर्तियां और भद्रगिरी पर्वत पर निर्मित विशाल मानस्तंभ की प्रतिकृति भी भेंट की। आचार्यश्री धर्मभूषणजी से मुनि दीक्षा प्राप्त करने वाले आचार्यश्री कुलरत्न भूषणजी संत शिरोमोण आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज को अपना श्रद्धा गुर मानते है और श्रद्धालु उन्हें एकलव्य।

आचार्य श्री ने कहा शासन-प्रशासन के कार्यों में हो हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग

पूर्व मुख्य न्यायाधिपति और मध्यप्रदेश मानव अधिकार आयोग के अध्यक्ष श्री नरेंद्र जैन ने शनिवार को सिद्धोदय सिद्धक्षेत्र नेमावर पहुंचकर आचार्यश्री विद्यासागर जी महाराज के दर्शन कर आशीर्वाद प्राप्त किया। उनके साथ आयोग के सदस्य सरबजीत सिंह भी थे। जैन समाज हरदा के ट्रस्टी राजीव श्री रविन्द्र जैन (पटवारी) एवं खातेगांव जैन समाज के प्रवक्ता नरेन्द्र चौधरी, पुनीत जैन ने बताया कि दोनों ने करीब 30 मिनट तक

आचार्यश्री से विभिन्न मुद्दों पर चर्चा कर मार्गदर्शन प्राप्त किया। आचार्यश्री ने शासन-प्रशासन के कार्यों में हिंदी का उपयोग ज्यादा से ज्यादा करने पर जोर दिया।

सिद्धोदय सिद्धक्षेत्र ट्रस्ट की ओर से श्री राजा भैया सूरत, कार्यकारी अध्यक्ष इंजीनियर श्री संजय मैक्स, उपाध्यक्ष श्री सुरेश काला, कोषाध्यक्ष श्री महेंद्र अजमेरा, श्री जिनेश काला, श्री सुशील काला ने मानव अधिकार आयोग के अध्यक्ष श्री नरेंद्र जैन, सदस्य श्री सरबजीत सिंह, एडिशन एसपी श्री सूर्यकांत शर्मा का सम्मान कर आचार्यश्री द्वारा हिंदी में रचित महाकाव्य मूकमाटी और जैन साहित्य भेंट किए। इसके बाद श्रीजेन और श्रीसिंह ने निर्माणाधीन भव्य पंचबालयती-त्रिकाल चौबीसी, सहस्त्रकूट जिनालय एवं संत निवास का भी अवलोकन किया।

भाजपा के पूर्व राष्ट्रीय उपाध्यक्ष प्रभात झा ने नेमावर में किये आचार्य श्री के दर्शन

नेमावर/हरदा - भाजपा के पूर्व राष्ट्रीय उपाध्यक्ष एवं पूर्व राज्यसभा सांसद

प्रभात झा ने सिद्धोदय सिद्धक्षेत्र नेमावर में जैनाचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के दर्शन किये। झा ने आचार्यश्री से देशहित, मानव सेवा, जल संरक्षण नदी संरक्षण पर्यावरण आदि प्रमुख विषयों पर लंबी चर्चा की।

जैन समाज के प्रवक्ता नरेंद्र चौधरी व पुनीत जैन ने जानकारी देते हुए बताया कि इसी अवसर पर आशीर्वचन स्वरूप आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज ने कहा कि देश एवं राजनेताओं को अपने प्राचीन भारतीय इतिहास का अध्ययन करना चाहिए। आचार्यश्री ने कहा कि भारत को विदेशी बीजों एवं वृक्षों पर आश्रित न होते हुए अपने देसी बीजों के माध्यम से कृषि में सुधार लाना चाहिए। किसी भी प्रकार के कच्चे माल को देश से बाहर नही बेचना चाहिए। पर्यावरण एवं वृक्षारोपण पर विचार प्रकट करते हुए आचार्यश्री जी ने कहा कि हमे छायादार एवं फलदार वृक्षों को ही लगाना चाहिए, क्योंकि उनके आश्रय से पशु-पक्षी भी अपना जीवन यापन करते हैं। विदेशी वृक्षों में न तो छाया है, न फल है और न ही फूल है और सुगंध भी नही है, वो तो मात्र शो पीस है। छायादार फलदार वृक्षों से धरती की उर्वरा शक्ति भी बढ़ती है और पर्यावरण चक्र भी स्वस्थ रहता है।

लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने किए गणिनी प्रमुख आर्यिका 105 विशुद्ध मति माताजी के दर्शन

भारत गौरव सिद्धांत रत्न त्रिलोक कल्याणी जगत पूज्या गणिनी प्रमुख आर्यिका 105 विशुद्ध मति माताजी की 73 जन्म जयन्ती के शुभ अवसर पर लोक सभा अध्यक्ष ओम बिरला गुरू माँ से आशीर्वाद लेने टोंक पहुँचे, सकल दिगंबर जैन समाज टोंक की तरफ से भव्य स्वागत किया गया।

दिव्यांगजन, वृद्ध एवं असहाय महिलाओं-पुरूषों के बीच कम्बल का वितरण

चौबीस तीर्थंकरों की निर्वाण स्थली श्री सम्मेदशिखरजी में भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी एवं श्री दिगम्बर जैन शाश्वत तीर्थराज सम्मेद शिखर ट्रस्ट के संयुक्त तत्वावधान में विगत दिनों "कम्बल वितरण" का समापन कार्यक्रम दिनांक 21 जनवरी 2021 दिन गुरूवार को पीरटांड प्रखण्ड के सभी दिव्यांगजन, वृद्ध एवं असहाय महिलाओं-पुरूषों के बीच कम्बल का वितरण करके किया गया।

कार्यक्रम का प्रारम्भ मुख्य अतिथि अंचलाधिकारी पीरटांड श्री विनय प्रकाश तिग्गा, प्रशिक्षु अपर-समार्हता श्री रमेश यादव, उप निरीक्षक श्री अनीश पाण्डेय एवं मधुबन जैन समाज के प्रबुद्ध व्यक्तियों द्वारा संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित करके किया गया, कमेटी के प्रबंधक श्री देवेन्द्र जैन व पुजारी श्री शैलेन्द्र जैन के द्वारा मंगलाचरण किया गया।

सर्वप्रथम कार्यक्रम के मुख्य व विशिष्ट अतिथियों का स्वागत कमेटी के वरिष्ठ प्रबंधक श्री सुमन सिन्हा, प्रबंधक श्री देवेन्द्र जैन, ट्रस्ट के वरिष्ठ प्रबंधक श्री प्रद्युम्न कुमार जैन, प्रबंधक श्री संजीव जैन ने किया एवं अन्य सम्मानीय अतिथियों का स्वागत ट्रस्ट के मुख्य स्वागतकर्ता श्री गंगाधर महतो, कार्यालय प्रशासक श्री ए. सईदी ने तिलक व अंगवस्त्र पहना कर किया।

कार्यक्रम में आये हुए दिव्यांग संघ का प्रतिनिधित्व कर रहे पदाधिकारियो दिव्यांग जन कल्याण संघ प्रखंड अध्यक्ष भागीरथ पंडित, कोषाध्यक्ष विनोद रविदास, दिव्यांग सामाजिक सेवा संस्थान के जिला उपाध्यक्ष जसवंत कुमार वर्मा का स्वागत कमेटी व ट्रस्ट के अधिकारियों ने तिलक पट्टिका पहना कर किया।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी, श्री दिगम्बर जैन शाश्वत तीर्थराज सम्मेदशिखर ट्रस्ट के उद्देश्यों को प्रधानाध्यपक श्री पूरण मांझी के द्वारा विस्तृत रूप से रखा गया जिसमें उन्होंने बताया कि विगत कई वर्षों के कार्यकलापों पर प्रकाश डालते हुए भविष्य में भी ट्रस्ट के द्वारा की जाने वाली कार्यों की रूप रेखा उपस्थित सभी के बीच रखते हुए बताया कि ट्रस्ट के हर आयोजन में कुछ ना कुछ मानव कल्याण के उद्देश्य निहित हैं।

उदाहरण स्वरूप खेल-कूद का आयोजन कर जहाँ नई प्रतिभा को तलाशने एवं उसे प्रशिक्षित करना है बल्कि युवाओं को खेल से जोड़कर उन्हें उचित मंच उपलब्ध करवाते हुए मानसिक भटकाव से रोकना है। दूसरी ओर अध्ययनरत विद्यार्थियों में प्रतिभा की पहचान करने हेतु प्रश्नमंच प्रतियोगिता एवं सफल विद्यार्थियों को उत्कृष्ट शिक्षा हेतु संसाधन उपलब्ध कराना, विद्यालय स्तर पर अच्छे प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों को ऐतिहासिक स्थलों का शैक्षणिक भ्रमण करवाकर उनके नैसर्गिक गुणों का विकास करना और एक स्वच्छ प्रतिस्पर्धा की परिपाटी तैयार करना है।

ट्रस्ट इस क्षेत्र में पिछड़े वर्गों के उत्थान के लिए पूर्व में भी कई योजनाबद्ध कार्य कर चुका है और भविष्य की सम्भावनाओं के प्रति भी विचारवान है इसी उद्देश्य की पूर्ति के हेतु ट्रस्ट के द्वारा प्रखण्ड के सभी दिव्यांगों की सूची तैयार करते हुए उन सभी दिव्यांगों, असहायों एवं वृद्धों के बीच कम्बल वितरण का कार्य किया गया।

श्री जगदीश जैन - पानीपत के सौजन्य से इस परोपकारी कार्य के अंतिम दिन मुख्य अतिथि के रूप में अंचलाधिकारी, प्रशिक्षु अपरसमाहर्ता तथा थाना प्रभारी के कर-कमलों से कम्बल वितरण प्रारम्भ किया गया, जिसमें आज अंतिम दिन कुल 155 दिव्यांग, 200 असहाय वृद्ध लाभान्वित हुए।

कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए अंचलाधिकारी ने कहा ट्रस्ट द्वारा कोरोना काल में जरूरतमंदों के बीच अनाज का वितरण, पिछले वर्ष खेल का आयोजन कर सामाजिक समरसता कायम करने का उत्कृष्ट कार्य किया जा रहा है। ट्रस्ट भविष्य में भी इन क्षेत्र के लोगों के विकास एवं जरूरतों को पूरा करने में अपना योगदान देते रहेगा, साथ ही प्रशिक्षु उप समाहर्ता, थाना प्रभारी ने भी कार्यक्रम को सम्बोधित कर दिव्यांगों का मनोबल बढ़ाया और ट्रस्ट के जनउपयोगी कार्यों की भूरी-भूरी प्रशंसा की, ट्रस्ट के महामंत्री श्री राजकुमार जैन अजमेरा ने बताया कि इस हाड़ कँपाती ठंड में सम्मेद शिखर जी, ईसरी, निमियाघाट आदि के सभी संस्थान में कार्यरत कर्मचारियों और मजदूरों के प्रोत्साहन के लिए 7 दिनों में लगभग 1700 लोगों के बीच कम्बल वितरण किया गया है।

सुरक्षा ही कोरोना से बचाव का एक मात्र उपाय है इसे देखते हुए इस कार्यक्रम में उपस्थित सभी लोगों के लिए मास्क, सैनेटाइजर की व्यवस्था की गई थी एवं सभी दिव्यांगों, वृद्धों एवं अतिथियों के अल्पाहार की व्यवस्था भी कमेटी एवं ट्रस्ट के द्वारा की गई थी। कार्यक्रम में मुख्य रूप से श्री कमल गंगवाल - कोलकाता, श्री राकेश - बॉबी जैन - गुवाहाटी, कैलाश जैन, श्री सुधाकर अन्नदात्रे, श्री प्रकाश भाई, ट्रस्ट के सभी अधिकारी व कर्मचारी उपस्थित थे।

डॉ. उज्ज्वल पाटनी सम्मानित

आचार्य प्रसन्नसागरजी महाराज के पावन सान्निध्य में अन्तर्मना धार्मिक व पारिमार्थिक न्यास द्वारा 2020-21 अलंकरण सम्मान समारोह आयोजित में आचार्य महाराज के करकमलों से डॉ. उज्ज्वल पाटनी को सुपार्श्वमती विशिष्ट पुरस्कार, जैन धर्म के प्रसार प्रचार के लिए श्री नीरज जैन, सी.एम.डी. जिनवाणी चैनल आगरा को पद्मश्री करुणा पुरस्कार, प्रो. नलिन के. शास्त्री, जैन विश्व भारती संस्थान,(मानद विश्वविद्यालय), लाडनूँ(राजस्थान) को तपश्वी सम्राट सेवा पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

सुसंस्कार- अष्टक

धरती माता दे रही, विशाल अन्न भण्डार
माँसाहार वही करते हैं, जिनके निकृष्ट विचार
गौमाता के दुग्ध मे, विरल शक्ति का श्रोत
फिर भी मंदिरा पी रहे, जिनको लागा रोग
मात-पिता की सेवा भली, बड़े पुण्य का काम
इनकी दुआओं से मिले, सुख साधन विश्राम
दुःखी जनों को देखकर, जागे नहीं मन में दया का भाव
भावी जनम में जानियो, वह सुअर बनें या काँव
मुलाजिमों की खोज में, सयानी बिटियन के बाप
वणिकपने को शायद लगा, अदृश्य शक्ति का श्राप
हिंसा पाप का मूल है, हिंसा ही दुःख त्राण
जो निर्बल को दुःख देत है, उनको हिंसक जान
सन्तोषी मानस ही सुखी, दुःख प्रबल संसार में
इच्छायें कम कर सरल बनकर, सुखी बन संसार में
क्षमावन्त बस वृक्ष है, श्रेष्ठ नहीं कोई राव
जल पिलाओ या घाव दो, सभी को देते छाँव

रचयिता, सुभाषचंद्र "सरल"

श्री स्वराज जैन (टाइम्स ऑफ इंडिया) की धर्मपत्नी श्रीमती संतोष जैन का निधन:

अनेक संस्थाओं से जुड़े भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के सम्माननीय सदस्य श्री स्वराज जैन (टाईम्स ऑफ इंडिया) की धर्मपत्नी श्रीमती संतोष जैन का आकस्मिक निधन हो गया। सदाचार, धर्म और सामाजिक परम्पराओं का अनुपालन सदैव उनकी प्राथमिकता में रहे और अपने नाम के अनुरूप हर समय वे उत्साह और संतोष से प्रसन्नचित रहती थीं। आप मुनिश्री ज्ञानसागर जी महाराज की परमभक्त थीं, उनकी धर्म में अटूट श्रद्धा थी। आपके द्वारा की गई सेवाएँ समाज के लिए सदैव अनुकरणीय रहेंगी।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी दिवंगत आत्मा के प्रति भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करती है।

भारत बने भारत अभियान

श्री सम्मेदशिखर पर्वत पर साफ-सफाई का कार्य पूर्ण

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेट शाखा कार्यालय श्री सम्मेद शिखर जी के द्वारा पर्वत की स्वच्छता को लेकर विगत माह से मधुबन तलहटी से लेकर पर्वत वन्दना पथ की सम्पूर्ण 27 किलोमीटर की की साफ-सफाई की गई है, पर्वत पर भारी मात्रा में पानी की बोतलें, पाउच, रैपर व कागज के ढेर लगे हुए थे।

तीर्थक्षेत्र कमेटी समय-समय पर पर्वत वन्दना पथ के अलावा आस-पास की साफ-सफाई, पर्वत की सफाई के लिए शिखरजी की सभी धर्मशालाओं के पदाधिकारियों से भी संपर्क कर जगह-जगह होर्डिंग लगा कर यात्रियों को जागरुक करने का कार्य भी कर रही है।

यात्रियों के द्वारा श्री सम्मेदशिखरजी पर्वत की स्वच्छता के लिए दिनांक 04 फरवरी 2021 को भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की ओर से श्री दिगम्बर जैन शाश्वत तीर्थराज सम्मेदशिखर ट्रस्ट के महामंत्री श्री राजकुमार जैन अजमेरा ने एक पत्र मधुबन के सभी संस्थाओं को लिखा था, उन्होंने अपने पत्र में अपील की है कि शाश्वत तीर्थराज श्री सम्मेदशिखरजी का ऐसा पर्वतराज है जहां से अनंतानंत भव्य आत्माओं ने एवं इस काल के 24 में से 20 तीर्थंकरों ने मोक्ष प्राप्त किया है, इस पुनीत पावन धरा पर प्रति वर्ष असंख्य यात्री वन्दना हेतु पधारते हैं, इसकी सुरक्षा, पवित्रता एवं उनके मूल स्वरूप को अक्षुण्ण बनाये रखने के लिए सभी के सहयोग की आवश्यकता है, सभी के सहयोग से ही हम ऐसा करने में सफल हो पाएँगे।

उपरोक्त पत्र में कमेटी की ओर से कुछ सुझाव भी दिये गए थे जिससे पर्वतराज की सुरक्षा एवं पवित्रता बनी रहे।

यात्री निवास जीर्णोद्धार कार्य प्रारम्भ

भारतवर्षीय दिगम्बर तीर्थक्षेत्र कमेटी ने पर्यटन विकास निगम लिमिटेड झारखण्ड सरकार का भवन यात्री निवास को पट्टे पर लम्बी अवधि के लिए शिखरजी आने वाले तीर्थ यात्रियों के सुविधार्थ ले रखा है, भवन की वर्तमान स्थिति ठीक न होने के कारण इसकी मरम्मत का कार्य प्रारम्भ किया गया है। यहां डबल बेड के दस कमरे, चार डॉरमेट्री, सभा कक्ष, स्वागत कक्ष, बड़ा रसोईघर एवं वाहन पार्किंग के लिए पर्याप्त स्थान है, साथ ही बच्चों के लिए खेल-कूद की जगह भी है, जिसमें बच्चों के झूले लगे हुए हैं। यहां ठहरने वाले यात्रियों को अपने कक्ष से ही पारसनाथ टोंक एवं चन्द्रप्रभ टोंक के दर्शन सहजता से होते हैं।

इस अभियान को आगे बढ़ाने में आप क्या योगदान कर सकते हैं ?

1) प्रधानमंत्री जी को सम्बोधित पत्र पर हस्ताक्षर अभियान आप भी चला सकते हैं। (पत्र प्रारुप अगले पेज पर)
2) लोगों को इस अभियान में शामिल होने के लिए प्रेरित कर सकते हैं।
3) अधिक से अधिक शिक्षकों एवं विद्यार्थियों तक इस अभियान को पहुँचाना सबसे प्रभावशाली रहेगा।
4) यदि आप अच्छे वक्ता हैं तो इस विषय पर जगह-जगह भाषण दे सकते हैं, परिचर्चा कर सकते हैं, संगोष्ठी कर सकते हैं।
5) यदि आप अच्छे लेखक हैं तो इस अभियान पर अच्छी कविता, लेख, कहानियाँ, गीत लिख सकते हैं। यदि आप अच्छे गायक हैं तो इस विषय पर अच्छे गीत गा सकते हैं। यदि आप अच्छे चित्रकार हैं तो इस विषय पर चित्र बनाकर प्रदर्शित कर सकते हैं।

6) अपने और अपने वालों के घर के मुख्य द्वार पर, अपने वाहनों पर, परिधानों पर, मोबाईल पर, अपने उपयोग की अन्य वस्तुओं पर किसी न किसी चित्र रूप में भारत को स्थापित कर अधिक से अधिक लोगों के लिए दृश्यमान बना सकते हैं।
8) अपने घर के सर्वोच्च स्थान पर भारत का ध्वज लगा सकते हैं। अपने वाहन पर भी ऐसा कर सकते हैं।
10) अपने मोबाइल का संचालन अपनी भाषा में कर सकते हैं। मोबाइल की डीपी में भारत का चित्र स्थापित कर सकते हैं।
12) अपने बच्चों की शिक्षा के लिए भारतीय भाषाओं का माध्यम चुन सकते हैं।
13) यदि आप शिक्षक हैं तो आपके पढ़ाने का विषय चाहे कोई भी हो उसमें बीच-बीच में भारत शब्द की पुनरावृत्ति करके विद्यार्थियों के मानस में भारत को स्थापित कर सकते हैं।
14) भारत के विषय पर चित्र प्रतियोगिता, गीत प्रतियोगिता, खेल प्रतियोगिता आयोजित कर सकते हैं।
15) अपने शहर या गाँव में जगह-जगह इस विषय पर पोस्टर/ स्टीकर लगा सकते हैं।
16) ऐसा करने वाले को पुरस्कृत कर सकते हैं।
17) यथासंभव भारतीय वेशभूषा को अपना सकते हैं।
18) यदि आप व्यापारी, व्यवसायी या उद्योगपति हैं, निर्माता हैं तो अपने उत्पाद की बंदी (पैकिंग) पर सारी सूचनाएं भारतीय भाषाओं में छपवा सकते हैं और भारत में निर्मित, मेड इन भारत, मेक इन भारत अंकित कर सकते हैं।
20) यदि आप उपभोक्ता हैं तो अपने उत्पादकों को, निर्माताओं को भारत नाम को अपनाने के लिए अनुरोध कर सकते हैं।

भारत बने भारत अभियान का गीत

है भारत नाम बड़ा प्यारा
इसे फिर से जगमगाना है।
किसी से कम नहीं हैं हम
ये दुनिया को दिखाना है।
गुरुजी ने बताया हमें समझाया
कि अपना देश निराला है।
इसका इतिहास बड़ा न्यारा
इसे फिर से जगमगाना है।
पढ़ोगे तो जानोगे, इसे मानोगे
हम क्या थे, क्या होना है।
लगाओ एक ही नारा
इसे फिर जगमगाना है।
ये भारत था, ये भारत है
रहेगा भारत सदा-सदा
इस सच को नहीं भुलाना है
इसे फिर से जगमगाना है।
यहाँ पे रहो या वहाँ पे रहो तुम
इस पर गर्व सदा करना
सारी दुनिया से कहलवाना
भारत ही नाम हमारा है।
ये गाना हर जगह गाना
भारत ही नाम हमारा है।

माननीय प्रधानमंत्री को भेजे जाने वाले पत्र का प्रारुप

प्रति,
श्री नरेन्द्र जी मोदी,
प्रधानमंत्री,
भारत सरकार, नई दिल्ली

भारत बने भारत

विषय- "भारत बने भारत" अभियान

महोदय,

सर्वविदित है कि संभवत विश्व में हमारा देश एकमात्र देश है जो दो अलग-अलग भाषा और लिपियों में दो अलग-अलग नामों से जाना जाता है। हिन्दी/देवनागरी में भारत, इंग्लिश/रोमन तथा अन्य विदेशी भाषा और लिपियों में India/इंडिया। शर्म आती है, दुख होता है, यह सोचकर कि आजादी के इतने वर्ष बाद भी हम उस नाम, भाषा और लिपि से मुक्त होना तो दूर अपितु और अधिक जकड़ गए हैं उसके जाल में जो गुलामी की प्रतीक है और हर उस भारतवासी के कलेजे में चुभती है जो अपने देश से प्यार करता है। देश की इच्छा के विपरीत वर्तमान प्रचलित शिक्षा व्यवस्था के कारण "भारत" लुप्त होता जा रहा है। India फल-फूल रहा है।

आपके नेतृत्व में पहली बार देश इस सुखद अनुभव से गुजर रहा है कि आज हमारी सरकार एक संप्रभु सरकार है जो देश हित और गौरव की रक्षा के लिए कठोर निर्णय लेने का साहस भी रखती है। अतः आपसे निवेदन है कि आजादी और देश के सम्मान की पूर्णता के लिए निम्न परिवर्तन यथाशीघ्र करने की दिशा में ठोस कदम उठाएं -

1. केन्द्र और सभी राज्यों की समस्त राजकीय कार्यवाही में, सभी मुद्राओं, सभी डाक टिकटों एवं पंजीयन मुद्रांक पत्रों पर किसी भी भाषा और लिपि में भारत को "भारत /Bharat" ही लिखा जाए, इंडिया या India नहीं।
2. दिल्ली के इंडिया गेट का नाम बदल कर "भारत द्वार" रखा जाए।
3. मुम्बई के गेटवे ऑफ इंडिया को भी बदलकर "भारत द्वार" किया जाए।

आपके नेतृत्व में भारत की जनता इस गौरवमयी परिवर्तन की साक्षी होने का आनन्द प्राप्त करने के लिए आतुर है।

आप ही अपने प्रिय देशवासियों की यह छोटी सी अभिलाषा पूर्ण करने में सक्षम हैं, यह मेरा दृढ़ विश्वास है।

अभिलाषी - एक भारतवासी

हस्ताक्षर

फरीदाबाद के सांसद एवं राज्यमंत्री सामाजिक न्याय एवं सशक्तिकरण श्रीकृष्णपाल गुर्जर एवं गाजियाबाद के सांसद एवं विदेश राज्यमंत्री श्री व्ही.के. सिंह को भारत बने भारत अभियान के हस्ताक्षरित पत्रों के बंडल सौंपते हुए समूह के सदस्य

यदि आप इस अभियान में सक्रिय कार्यकर्ता बनना चाहते हैं तो सम्पर्क करें -7974740021

आचार्य श्री विद्यासागर अहिंसक रोजगार प्रशिक्षण केन्द्र विजयनगर, इन्दौर (म.प्र.)

कृपया इसे फाड़कर न फेकें, इसे पढ़ने के उपरान्त किसी अन्य व्यक्ति तक पहुंचा दें

भारत बने भारत अभियान

इसमें सबका हो योगदान

भारत का अर्थ

भा = आभा, तेज
रत = सहित, युक्त
भारत = तेज युक्त, तेजस्वी, आभामय

इंडिया शब्द का अर्थ

इंडिया = जहां इंडियन रहते हैं।

इंडियन = (ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी के अनुसार) ओल्ड फेशन्ड, ऑफेन्सिव, जिसका मतलब है असभ्य और अपराधी प्रवृत्ति के लोग।

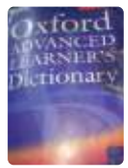

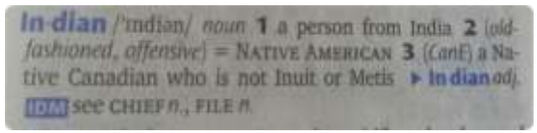

In·dian /ˈɪndiən/ noun 1 a person from India 2 (old-fashioned, offensive) = NATIVE AMERICAN 3 (CanE) a Native Canadian who is not Inuit or Metis ▸ Indian adj.
IDM see CHIEF n., FILE n.

क्या आप इस अर्थ से सहमत हैं ? क्या हम असभ्य और अपराधी हैं ? यदि नहीं तो आज ही शपथ लें कि –

शपथ

हम भारत के लोग अपने दिल पर हाथ रखकर स्वयं की साक्षी में यह शपथ लेते हैं कि देश में, चाहे विदेश में, अपनी भाषा या विदेशी भाषा में भारत को भारत ही कहेंगे, भारत के सिवा कुछ नहीं कहेंगे।

अपने देश के लिए भारत नाम का प्रयोग करते हुए हम हमेशा याद रखेंगे कि –

भारत कभी विश्व गुरु था। हमें अपने देश को पुनः विश्वगुरु बनाना है।

भारत कभी सोने की चिड़िया था। अब इसे सोने का शेर बनाना है।

भारत का आदर्श वसुधैव कुटुम्बकम् है। सारा विश्व हमारा परिवार है।

क्यों आवश्यक है यह अभियान :–

1) भारत के अलावा सभी देशों जैसे अमेरिका, जापान, जर्मनी, इटली, फ्रांस, स्विटजरलैंड, बांग्लादेश, पाकिस्तान, अफगानिस्तान सभी का देशी और विदेशी, किसी भी भाषा में एक ही नाम है। **भारत** का नाम भारतीय भाषाओं में अलग और विदेशी भाषा में अलग क्यों ?

2) क्या कोई भी मनुष्य बुरे सपने को याद रखना चाहता है? क्या दुर्घटना की तस्वीरों से घर की दीवारें सजाई जाती हैं? कदापि नहीं। तो क्यों हम अपने देश की पहचान ऐसे नामों से बनाए हुए हैं जो हमें देश की गुलामी की याद दिलाते हैं। **भारत** के अतिरिक्त अन्य नाम विदेशी आक्रांताओं के द्वारा अपने शासनकाल में स्थापित किए गए, पर अब तो सत्ता हमारी अपनी है, अब हम एक स्वतंत्र, संप्रभु देश हैं तो क्यों न हम अपने स्वर्णिम इतिहास के प्रतीक **भारत** नाम से ही देश–विदेश में अपनी पहचान बनाएं? **भारत** नाम में समाहित है हमारा समृद्ध इतिहास, जब हम विश्व गुरु और सोने की चिड़िया जैसे विशेषणों से पहचाने जाते थे। अंग्रेजी माध्यम की शिक्षा की बदौलत सब कुछ तो पाश्चात्य सांचे में ढल चुका है तो क्या पाश्चात्य के प्रभाव में हम अपना स्वर्णिम नाम भी खो दें?

3) **भारत** सिर्फ एक नाम नहीं। इस नाम में समाहित है –

- हमारा स्वर्णिम इतिहास
- सर्वश्रेष्ठ समावेशी संस्कृति
- विश्व के सर्वश्रेष्ठ जीवन मूल्य
- स्वस्थ जीवन शैली
- स्वस्थ परिवार संरचना
- स्वस्थ सामाजिक संरचना
- स्वस्थ भोजन पद्धति
- स्वस्थ तन–मन–वचन
- शालीन वेशभूषा
- उत्तम न्याय पद्धति
- उत्तम शिक्षा पद्धति
- उत्तम चिकित्सा पद्धति
- उत्तम कृषि पद्धति
- उत्तम पर्यावरण
- उत्तम संगीत, नृत्य, कलाएं
- उत्तम आजीविका
- भारतीय जीवन दर्शन
- भारतीय भौतिक शास्त्र
- भारतीय रसायन शास्त्र
- भारतीय अर्थशास्त्र
- भारतीय नीतिशास्त्र
- भारतीय ग्रन्थ
- भारतीय साहित्य
- भारतीय भाषाएं

और भारतीय भाषाओं में समाहित अथाह ज्ञान।

4) भारत नाम समावेशी है। वसुधैव कुटुम्बकम् का प्रतिनिधि है यह नाम **भारत**। सारा विश्व हमारा परिवार है। इस परिवार में केवल मनुष्य ही नहीं प्रत्येक जीव का समावेश है।

भारत बने भारत अभियान का उद्देश्य

1) देश–विदेश में हमारा देश **भारत** के नाम से ही पहचाना जाए।

2) भारतीय संविधान और सभी सरकारी संस्थानों जैसे संसद, विधानसभा व सभी कार्यालयों, न्यायालयों में भारतीय भाषाओं में या विदेशी भाषाओं में केवल एक ही नाम **भारत** को प्रचलित कराना।

3) सभी शासकीय–अशासकीय स्थान/संस्थान जिनके नाम में इंडिया शब्द का प्रयोग हुआ है, उन्हें परिवर्तित कर सभी भाषाओं में **भारत** नाम का प्रयोग प्रचलित कराना जैसे – इंडिया गेट की जगह भारत द्वार, गेटवे ऑफ इंडिया की जगह भारत प्रवेश द्वार, पार्लियामेन्ट ऑफ इंडिया की जगह पार्लियामेन्ट ऑफ भारत, रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया की जगह रिजर्व बैंक ऑफ भारत, स्टेट बैंक ऑफ इंडिया की जगह स्टेट बैंक ऑफ भारत, एलआईसी ऑफ इंडिया की जगह एलआईसी ऑफ भारत, इंडियन रेल की जगह भारतीय रेल आदि।

भारत नाम को अधिक से अधिक दृश्यमान–श्रव्यमान बनाना।

आचार्य कुंदकुंद की जन्मभूमि कोनाकोंडला (आंधप्रदेश) के विकास के लिए देशभर के जैन समाज से अपील

तीर्थक्षेत्र कमेटी की प्रस्तावित योजना में सहभागी बनें

श्रुतधर आचार्य की परम्परा में कुन्दकुन्दाचार्य का स्थान महत्वपूर्ण है। इनकी गणना ऐसे युगसंस्थापक आचार्यों के रूप में की गयी है, जिनके नाम से उत्तरवर्त्ती परम्परा कुन्दकुन्द-आम्नाय के नाम से प्रसिद्ध हुई है। किसी भी कार्य के प्रारम्भ में मंगलरूप में इनका स्तवन किया जाता है। जिस प्रकार भगवान महावीर, गौतम गणधर और जैनधर्म मंगलरूप हैं, उसी प्रकार कुन्दकुन्द आचार्य भी मंगलरूपी हैं। इन जैसा प्रतिभाशाली आचार्य और द्रव्यानुयोग के क्षेत्र में प्रायः दूसरा दिखलाई नहीं पड़ता।

कुन्दकुन्द भगवान की जन्म भूमि कोनाकोंडला जिसे आज सम्पूर्ण विश्व में प्रसिद्ध होना चाहिए था आज यह स्थान समाज से विलुप्त सा प्रतीत होता दिखाई दे रहा है।

जैन धर्म को जन-जन तक को पहुँचाने में महत्वपूर्ण योगदान देने वाले हमें अनेकों ग्रन्थ प्रदान करने वाले जिसकी वजह आज हम भगवान जिन की वाणी और जैन धर्म को जान पा रहे, उनके उपेक्षित पड़े जन्म स्थान को भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी विकसित करने का कार्य कर रही है और इस कार्य को पूर्ण करने के लिए समस्त समाज का सहयोग अति आवश्यक है।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी देश-विदेश की समाज से अपील करती है कि हमारे आचार्यों में सबसे प्रमुख आचार्य कुन्दकुन्द भगवन के जन्म स्थान कोनाकोंडला (आंधप्रदेश) के विकास के लिए तन-मन धन से तीर्थक्षेत्र कमेटी का सहयोग करें।

तीर्थक्षेत्र कमेटी ने इस वर्ष पहाड़ के वृक्षारोपण का कार्य शुरू किया है, तमिलनाडु की भांति आंधप्रदेश में प्राचीन तीर्थक्षेत्रों के आसपास के मुख्य-मार्गों, राजमार्गों पर क्षेत्र का नाम व दूरी दर्शाने वाले बोर्ड लगाए गए हैं।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी ने कोनाकोंडला विकास के लिए आरंभिक रूप से 2 करोड़ व्यय करके विकास की योजना बनाई है जिसके लिए आप मुक्त हस्त से दान कर इस इतिहासिक कार्य के लिए विभिन प्रकार से सहभागी बन सकते है-

- कोनाकोंडला में एक दिगंबर जैन मंदिर व भव्य स्मारक का निर्माण होना है, मंदिर निर्माण कार्य में आप सहयोगी बन सकते हैं।
- तीर्थयात्रियों के ठहरने के लिए एक धर्मशाला का निर्माण कार्य होना हैं, एक कमरे की सहयोग राशि 5,01,000 /- रु. है।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की अपील

तीर्थक्षेत्रों और शहरों की धर्मशालाओं को Dharmashala.in से जोड़ें

आज डिजिटल माध्यम को प्राथमिकता देते हुए सब कुछ ऑनलाइन होता जा रहा है, बिजली बिल भुगतान से लेकर विमान का टिकट तक व्यक्ति कम समय से घर बैठे आसानी से बुक कर रहा है। लेकिन अपने तीर्थक्षेत्रों में अभी तक इस प्रकार की सुविधा को चालू नहीं की गयी है, इसी बात को ध्यान में रखते हुए तीर्थक्षेत्रों के सरंक्षण की दिशा में भारतवर्षीय दिगबर जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी ने तीर्थक्षेत्रों और शहरों मे स्थित धर्मशालाओ को जोड़ने के लिए एक मंच तैयार किया है जिसका नाम है: "धर्मशाला.इन"।

तीर्थक्षेत्र कमेटी ने इस योजना को देश-विदेश में पहुँचाने की योजना बनाई है अभी तक भारत के सभी छोटे-बड़े तीर्थों एवं विभिन्न शहरों से संपर्क कर वहां पर स्थित धर्मशालों की जानकारी एकत्रित की जा रही है।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी भारत के सभी तीर्थक्षेत्रों व शहरों में स्थित धर्मशालों के पदाधिकारियों/ ट्रस्टियों एवं देश-विदेश की सामज से अपील करती है कि देशभर की सभी जैन धर्मशालाओं को जोड़ने वाली इस योजना Dharmashala.in से जुड़ें और जुड़ने वाली सभी संस्थाओं को तीर्थक्षेत्र कमेटी की ओर से टेबलेट, धर्मशाला प्रबंधन सोफ्टवेयर तथा एलईडी बोर्ड निःशुल्क दिया जायेगा ।

- इस योजना मुख्य प्रायोजक के लिए 5,01,000/-रु., सह-प्रायोजक 1,51,000/- रु (कुल 5) एवं साधारण प्रायोजक 51,000/- (कुल 5) का दान कर सहभागी बन सकते हैं।
- इस योजना के अंतर्गत प्राम्भिक रूप से प्रत्येक तीर्थक्षेत्र पर एक-एक धर्मशाला के नाम का एलईडी बोर्ड लगाया जाएगा है, 5100/- रु. की दान राशि प्रदान कर सहभागी बन सकते हैं।

यदि आपको इस संबंध में किसी प्रकार अतिरिक्त जानकारी या तकनीकी सहायता की आवश्यकता हो तो श्री निखिल जैन व उनकी टीम से 090211-95528 पर संपर्क कर सकते हैं।

RNI-MAHBIL/2010/33592
Published on 1st of every month
License to post without prepayment -
WPP No. MR/Tech/WPP-90/South/2019-21
Jain Tirth vandana, English-Hindi February 2021
Posted at Mumbai Patrika Channel, Mumbai GPO Sorting Office
Mumbai-400001, Regd. No. MCS/160/2019-21,
Posted on 16th and 17th of every month

With Compliments

From:

GFL

GUJARAT FLUOROCHEMICALS LTD.

(Company of Siddho Mal-Inox Group)

INOX

GROUP OF COMPANIES

Corporate office :
INOX Towers, 17, Sector 16-A,
NOIDA - 201 301 (U.P.)
Tel: 0120-614 9600
Email : contact@gfl.co.in

New Delhi Office :
612-618, Narain Manzil, 6th Floor,
Barakhamba Road,
New Delhi - 110 001
Tel: +91-11-23327860
Email : siddhomal@vsnl.net

Printed and Published by **UMANATH RAMAJOR DUBEY** on behalf of **BHARATVARSHIYA DIGAMBER JAIN TIRTHKSHETRA COMMITTEE**, Printed at **TRIMURTI PRINTERS**, 5/7 DADARKAR BUILDING, V P ROAD, C P TANK, MUMBAI-400 004 and Published from BHARATVARSHIYA DIGAMBER JAIN TIRTHKSHETRA COMMITTEE, HIRA BAUG, 2ND FLOOR, C P TANK, MUMBAI-400 004. Editor : **UMANATH RAMAJOR DUBEY**